सम्पादकीय

''शिक्षा मानवता में पूर्णता की अभिव्यक्ति है'' - **स्वामी विवेकानन्द**

प्राचीनकाल से ही हमारा देश ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति का अनुपम संगम रहा है। विगत वर्षों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। हमेशा यह प्रयास रहा है कि उच्च शिक्षा सभी के लिए सुलभ हो। महाविद्यालयों एवं मुक्त विश्वविद्यालयों के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। हमें बदलती हुई नवीन परिस्थितियों एवं पुरानी संस्कृति के बीच समन्वय रखते हुए अपने लक्ष्यों को निर्धारित करना है। नयी-नयी विचार धाराओं एवं स्थापनाओं के दौर से गुजरता हुआ साहित्य परिवर्तन की बयार लेकर आता है। उससे नई सोच उत्पन्न होती है। यही नयी सोच हमें साहित्य में कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा मानव को सभ्य एवं गुणी बनाती है। शिक्षा ही परम्परा की धरोहर को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है। इस तरह संस्कृति की निरन्तरता को बनाये रखने में सहायक होती है।

'अमर ज्योति' पत्रिका का यह अंक विद्यार्थियों की सृजनात्मक कला को प्रदर्शित करता है। इस अंक में विद्यार्थियों ने कविता व लेखों के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जागरूकता व कर्त्तव्य निष्ठा का परिचय दिया है। महाविद्यालय की उपलब्धियों एवं प्रगति के कलेवर को समेटे हुए 'अमर ज्योति' पत्रिका का यह अंक नई साज-सज्जा एवं कलेवर के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। रंग-बिरंगे छाया-चित्र आपको महाविद्यालय में सम्पन्न हुए सांस्कृतिक कार्यक्रमों, क्रीड़ा परिषद एवं महाविद्यालय में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह की झलक दिखायेंगे।

सर्वप्रथम, मैं अपने कॉलेज के प्राचार्य जी को सम्पादक मण्डल की ओर से धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होंने हमें यह उत्तरदायित्व सौंपा तथा समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझावों से पत्रिका को एक नवीन दिशा एवं गति प्रदान की। छात्र-कल्याण अधिष्ठाता डॉ0 केशव जी एवं सभी शिक्षक साथियों का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मेरे अनुनय को स्वीकार कर अपनी रचनाएँ देकर इस पत्रिका को उन्नत बनाया। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। इस पत्रिका के सृजन में इसके सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों ने अपना अमूल्य समय दिया है उनका सहयोग एवं योगदान मेरे लिए सुखद स्मृतियाँ बनकर रहेगा। सभी छात्र, छात्राएँ भी पत्रिका को उन्नत बनाने में सहयोग देने के लिए बधाई के पात्र हैं।

अंत में मैं अभिषेक वशिष्ट जी को भी हार्दिक धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने पत्रिका के टंकन में अपना सहयोग प्रदान किया।

डॉ0 अरुण लता वर्मा

प्रधान सम्पादक

अस्तित्व बोध

तुम हो? किन्तु क्यों? क्या सोचा है कभी?
यदि नहीं, तो ठहरो और सोचो अभी।
क्योंकि दुनिया भर के कामों से, है सर्वाधिक अनिवार्य यही।
लाखों-करोड़ों की दुनिया में, क्यों इतना जरूरी था, तुम्हारा आना।
असंख्य लोगों में किसी एक का होना, क्या महत्व रखता है,
कितना महत्व रखता है, तुम्हारा होना न होना।
तुम्हारे न होने से दुनिया नहीं रूकेगी, किन्तु एक जाएँगे, बल्कि,
आरम्भ ही नहीं होंगे, वे सभी अमूर्त परिवर्तन,
अमूर्त अविष्कार, अमूर्त ज्ञानकोष, अमूर्त ख्यातियाँ,
और वह अमूर्त भविष्य, जिनका अस्तित्व है तुमसे।

महापुरुष, हमारी ही तरह, इसी धरती पर पैदा होते हैं।
साधारण तरह से, वे जन्म लेते हैं,
तो दुनिया नाचती-गाती नहीं है,
क्योंकि! वे महापुरुष बनकर, दुनिया में नहीं आते।
किन्तु दुनिया शोक मनाती है, रोती है, प्रभावित होती है,
जब वे दुनिया को छोड़ते हैं, क्योंकि दुनिया छोड़ते समय तक
वे महान बन चुके होते हैं।
वे महान होते हैं, क्योंकि वे पूछते हैं,
स्वयं से कि क्या हैं वे और क्यों हैं वे।
साधारणता से सफलता तक के बीच की जो दूरी है, वह
एक प्रश्न से उत्तर की दूरी है, और प्रश्न है अस्तित्व का।
दुनिया नहीं याद रखती, किसी के होने को,
ना याद रखेगी, उसे याद दिलाना पड़ता है,
और हमेशा हर युग में, उसे याद दिलाना पड़ेगा,
कि तुम हो। तुम ठहरो! और एहसास दिलाओ,
दुनिया को तुम्हारे होने का, अब पूछो खुद से,
कि तुम हो, किन्तु क्यों?

नकुल जादौन
श्री विनोद कुमार
बी0ए0 तृतीय वर्ष

शिक्षा का स्मरण

जो मानव को उज्ज्वल बना दे
जो पढ़े हुए को अमल करा दे
जो व्यवहार को अमल करा दे
जो पल-पल को स्वर्णिम बना दे
जो मन को स्वछन्द बना दे
जो जीवन को खुशनुमा बना दे
जो यादों को महान बना दे
जो ज्ञान से आबाद करा दे
जो हृदय में पुस्तकालय बना दे
जो खुद से यकीनन मुक्त कर दे
जो खुद से इबादत कर दे
जो हमें स्वतन्त्र बना दे
जो कागज पर छवि बना दे
जो दीपक का बोध करा दे
जो हमें मानव बना दे

दोस्ती है जिंदगी

आखिर जिंदगी मेहमान ही तो है,
जो इतनी गलतियों के बाद भी .....
इतनी नफरतों के बाद भी,
इतनी खामियों के बाद भी,
हमें ..... कुबूल ही तो करती है,

आखिर जिंदगी हम सब की
मेहमान ही तो होती है।

वीरेन्द्र सिंह
परास्नातक हिंदी
प्रथम सेमेस्टर

गीत

पढ़ न सके यदि मौन शब्द के मानी तुम क्या जानोगे ?
तन्हाई से बात न की तो खुद को क्या पहचानोगे ?

देखा है क्या चन्दा को बादल से अठखेली करते ?
और कभी बिजली को तेज कुलांचे हिरण सी भरते ?
पैठ समुन्दर में तुमने मँझधारों को नापा है क्या ?
या पंछी बन तुमने पूरा आसमान भाँपा है क्या ?

अगर नहीं तो धरती से नभ तक को तुम क्या छानोगे ?
तन्हाई से बात न की तो खुद को क्या पहचानोगे ?

कटी पतंगे कभी लूटने का आनन्द लिया है क्या ?
बरसातों में कागज की नावों में सफ़र किया है क्या ?
किसी अजनबी की शादी की दावत तुमने खायी क्या ?
झूठ बोलकर कॉलेज से है लम्बी रेस लगायी क्या ?

बिन अहसास जिये जीवन को जीवन कैसे मानोगे ?
तन्हाई से बात न की तो खुद को क्या पहचानोगे ?

बिना किसी भी कारण के तुम रात-रात भर जागे क्या ?
एक घड़ी जीने को दिन-दिन भर बेसुध हो भागे क्या ?
भूख प्यास सब भूल कभी तुम पर जुनून है छाया क्या ?
दीवानेपन की हर हद से पार कभी कुछ भाया क्या ?

बिना चुनौती को स्वीकारे धनुष भला क्या तानोगे ?
तन्हाई से बात न की तो खुद को क्या पहचानोगे ?

डॉ0 सीता राठौर ''सागर''
संस्कृत विभाग

गीतम्

प्रीतिगानं विना श्वासरिव बन्धनम्।
त्वं विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।
गीतसंगीतमधुरच्च मन्त्रं नवं
कर्णकुटु एव प्रतिभाति सन्तापकं
शत्रुवत् दूयते कलरवं प्रतिदिनं।।
त्वां विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।
वस्त्रमाभूषणं प्रति विरक्तं मनः
सारहीनाः विभवाः जगतीतले
सारतत्वं विना कीदृशं रञ्जनम्।।
त्वां विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।
कन्दराकूपसागर सरोवर सरित्
तरूलतापुष्प आदीनि नहि रोचते
भाति में अन्धकारं निगूढं जनं।।
त्वां विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।
अम्बरं वा धरा दिनकरः वा शशिः
ज्योत्स्ना वा उषा हन्त! मरणान्तकं
धैर्यध्यानं विना दूषितं चिन्तनं।।
त्वां विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।
देहबन्धाश्च शिथिलाः विरहो गुरुः
वज्रवत् तीक्ष्णमुर्मिप्रहारश्शतं
नास्ति तीरं विलुप्तञ्च आलम्बनम्।।
त्वां विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।
कारणं किम् न जानाभि हसितङ्गतम्
जन्मजन्मातराणांच सौख्यं गतम्
दुर्लभं दर्शनं किम् कथम् सर्जनम्।।
त्वां विना जीवनं अस्ति किम् जीवनम्।।

डॉ0 सीता राठौर ''सागर''
संस्कृत विभाग

'एक स्थाई कल के लिए आज लैंगिक समानता'

''समाज के निर्माण का आधार है नारी
अकेले होकर भी पूरा परिवार है नारी
कभी माँ, कभी पत्नी, कभी बहन बनती है
हर रिश्ते में त्याग व प्रेम का संसार है नारी''

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, महिला अधिकार आन्दोलन का एक बड़ा हिस्सा है जो लैंगिक समानता, महिलाओं के प्रति हिंसा, दुर्व्यवहार जैसे मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करता है। इसके अलावा महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा एवं प्यार को दर्शाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस को महिलाओं के आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक उपलब्धियों के रूप में मनाया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर साल 8 मार्च को मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देना है। हर साल महिला दिवस किसी **थीम** पर आधारित होता है। जैसे

'एक स्थाई कल के लिए आज लैंगिक समानता' जरूरी है। कुछ समय से लैंगिक समानता पर काफी चर्चा हो रही है। लोग इस विषय पर काफी सचेत हैं।

स्त्री व पुरुष में समानता एक सुन्दर और सुरक्षित समाज की नींव है। जिस पर विकास रूपी इमारत बनाई जा सकती है। लैंगिक समानता किसी समाज की वह स्थिति है। जिसमें संसाधनों एवं अवसरों की उपलब्धता की दृष्टि से स्त्री व पुरुषों में कोई भेद नहीं किया जाता। सभी स्त्री व पुरुषों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में समान रूप से देखा जाता है। आज की नारी पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं। चाहें राजनीति का क्षेत्र हो या सामाजिक, व्यवसायिक हो या वैज्ञानिक नारी हर क्षेत्र में अपना स्थान बना चुकी है।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस सर्वप्रथम 1909 में मनाया गया। इसे आधिकारिक मान्यता तब दी गई जब 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने थीम के साथ इसे मनाना शुरू किया। इस दिन महिलाओं व उनकी उपलब्धियों के प्रति सम्मान प्रकट कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है। साथ ही भेदभाव मिटाकर समानता के बीच उनके अधिकारों की मांग की जाती है। जिससे वे पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल सकें।

इतिहास इस बात का गवाह है कि प्राचीनकाल में भी हमारे देश में कई महान नारियाँ पैदा हुई हैं जिन्होंने देश की शान, गौरव व गरिमा को बनाये रखा है। जैसे- महारानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, अहिल्याबाई आदि नारियाँ हुई हैं जिनसे हमारे देश को गर्व है।

मीरा की अमर भक्ति, जहर से मर नहीं सकती।
ये झाँसी वाली रानी है किसी से डर नहीं सकती,
मदर टेरेसा, कल्पना हो या सानिया मिर्जा असम्भव क्या है
जो नारी कर नहीं सकती ।।

नारी अब अबला नहीं सबला है आज की। नारी प्रत्येक क्षेत्र को अपने प्रभाव क्षेत्र में लेकर अपनी शक्ति एवं योग्यता का परिचय दे रही है। राष्ट्र निर्माण गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका को ध्यान में रखते हुए सरकार ने 2001 को महिला सशक्तिकरण का वर्ष घोषित कर दिया था और महिलाओं को स्वशक्ति प्रदान करने की राष्ट्रीय नीति अपनाई थी। सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना शिक्षा के महिलाओं की परिस्थिति में सकारात्मक परिवर्तन असम्भव है। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में जागरूकता आयी है। वे अपने बारे में सोचने लगी हैं उन्होंने महसूस किया है कि घर के बाहर भी जीवन है। उनके अन्दर आत्मविश्वास का संचार हुआ है। आज वे अपने जीवन से जुड़े फैंसले स्वयं लेने में समर्थ हैं।

महिलाओं के लिए सरकार ने अनेक योजनाएँ बनाई हैं।
जैसे- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

सुकन्या समृद्धि योजना

फ्री सिलाई मशीन योजना

सुरक्षित मातृत्व अवकाश योजना आदि।

लिंग समानता हमारे वर्तमान आधुनिक समाज में गम्भीर मुद्दों में से एक है। यह महिलाओं और पुरुषों के लिए जिम्मेदारियों, अधिकारों और अवसरों की समानता दर्शाता है। वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हानिकारक प्रथाओं को भी समाप्त करने की आवश्यकता है। जिससे महिलाएँ एक हिंसा मुक्त परिवेश में सम्मानपूर्वक जीवन जी सकें। इसके लिए उन्होंने सहयोग देने के साथ-साथ उनका आर्थिक सशक्तिकरण भी जरूरी है। बाल लिंगानुपात में गिरावट, पक्षपात पूर्ण तरीके से लिंग चयन की परम्परा और बाल विवाह इन सभी से पता चलता है कि लैंगिक भेदभाव और लैंगिक असमानता किस हद तक भारत के लिए एक चुनौती बनी हुई है। महिलाओं के साथ घरेलू हिंसा की भी घटनाएँ बहुत होती हैं। विशिष्ट अल्पसंख्यक समूहों की महिलाएँ अपने जीवन साथियों की हिंसा का सर्वाधिक सामना करती हैं। पिछले कई वर्षो से भारत में महिलाओं के खिलाफ घरेलू देश का सबसे अधिक हिंसक अपराध रहा है। सरकार ने महिलाओं के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने का प्रयास किया है। साथ ही उनकी तस्करी घरेलू हिंसा, यौन शोषण रोकने के लिए विशेष उपाय किये हैं। जनवरी, 2015 में बालिकाओं का संरक्षण और सशक्तिकरण करने वाले अभियान 'बेटी बचाओ' 'बेटी पढ़ाओ' की शुरूआत की गई। जिसे राष्ट्रीय स्तर पर चलाया जा रहा है। वित्त पोषण सेवाओं के साथ-साथ महिलाओं की दक्षता और रोजगार कार्यक्रम देश के कोन-कोने में, सुविधाओं से वंचित ग्रामीण महिलाओं तक पहुँचा रहे हैं। यौन शोषण, घरेलू हिंसा और असमान पारिश्रमिक से सम्बन्धित कानूनों को भी मजबूती दी जा रही है।

जागरूकता की कमी और असमानता के कारण समाज में महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता। गर्भ में ही उन्हें मार दिया जाता है और कुछ परिवारों में लड़कियों को छोटी उम्र में ही घर के कामों में लगा दिया जाता है। उन्हें अच्छी शिक्षा, अच्छी नौकरी से वंचित रखा जाता है। भारत में लैंगिक समानता अभी भी दूर का सपना है। शिक्षा, उन्नति व आर्थिक विकास के बावजूद कई राष्ट्र लैंगिक असमानता से पीड़ित हैं। भारत उनमें से एक है। भारत के अलावा यूरोपीय, अमेरिका और एशियाई देश भी उसी श्रेणी में आते हैं।

भारत या दुनिया में लैंगिक समानता तब होगी जब लड़के व लड़कियों के साथ समान व्यवहार किया जायेगा। इस समानता का अभ्यास स्कूलों, कार्यालयों, वैवाहिक सम्बन्धों में किया जाना चाहिए। भारत लैंगिक समानता स्थापित करने के मार्ग में अनेक कठिनाईयाँ हैं। हमारी मानसिकता पितृ सत्तात्मक पर आधारित है। जहाँ लड़कों को उन लड़कियों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है जिन्हें सिर्फ एक बोझ के रूप में देखा जाता है और तीन तलाक जैसे मुद्दों पर मतभेद पितृसत्तात्मक मानसिकता को प्रतिबिम्वत करता है। भारत में लड़के व लड़कियों के बीच न केवल उनके घरों और समुदायों में बल्कि हर जगह लिंग असमानता दिखाई देती है। पाठ्य पुस्तकों, मीडिया, फिल्मों आदि सभी जगह लिंग असमानता दिखाई देती है। जो भारत में लैंगिक समानता के लिए खतरा है। महिलाओं के प्रति असंवेदनशीलता उन्हें बलात्कार, धमकी कार्यस्थलों पर और सड़कों पर असुरक्षित माहौल पैदा करती है। जिसके कारण लैंगिक समानता प्राप्त करना एक कठिन कार्य बन गया है। इसके लिए माता-पिता को लड़के व लड़कियों दोनों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों को एक दूसरे की इज्जत करना सिखाना चाहिए। स्कूली शिक्षा एवं सामाजिक संस्कृति भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यौन शिक्षा, जागरूकता अभियान कन्या भ्रूण हत्या का पूर्ण उन्मूलन, दहेज प्रथा बाल विवाह के विषाक्त प्रभाव के विषय में भी छात्रों को शिक्षा देनी चाहिए।

भारत में लैंगिक समानता की राह कठिन है असम्भव नहीं। हमें अपने प्रयासों में ईमानदार होना चाहिए और महिलाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदलना चाहिए। हम सभी मनुष्य प्रेम, करुणा एवं सशक्तिकरण की भावना से भरे हैं। हमें एक समान होकर प्रगति के पथ पर अग्रसर होना चाहिए। आजादी के बाद की सरकारों ने कई तरह की पहल की है। कुछ योजनाएँ सरकार द्वारा चलायी जा रही है जैसे-

कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित छात्रावास की व्यवस्था करना। देहाती व शहरी गरीब महिलाओं के लिए प्रशिक्षण व रोजगार का प्रबन्ध करना। राष्ट महिला कोष ने गरीब महिलाओं के लिए लघु स्तर पर फंड की व्यवस्था भी की है।

इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा बनाये गये अनेक कानून लोगों को उनके लिंग के बावजूद सुरक्षा प्रदान करते हैं। जैसे समान पारिश्रमिक अधिनियम, कार्यस्थल पर महिलाओं के उत्पीड़न पर रोकथाम। वर्तमान युग में भी सरकार के साथ मिलकर गैर सरकारी संगठन महिलाओं को उनका हक दिलाने के लिए दृढ़तापूर्वक कार्य कर रहे हैं। इससे हमारे समाज में महिलाओं के प्रति लोगों का नजरिया बदला है और साथ ही महिलाएँ भी अपने अधिकारों के प्रति जागरुक हो गई हैं। आज वे पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। आज की नारी देश के अन्दर और बाहर मौजूद दुश्मनों से देश की रक्षा करने के साथ-साथ उनको मुँह तोड़ जबाव दे रही हैं। 2018 में भारतीय वायु सेना की फ्लाइंग ऑफीसर अबनी चतुर्वेदी ने अकेले लड़ाकू विमान उड़ाकर इतिहास रचा है। भारत सरकार की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक भारतीय सेना में 6807 से अधिक महिलाएँ काम कर रही हैं। वायु सेना में महिलाओं की संख्या 1607 है। सबसे अधिक महिलाएँ नैवी में काम कर रही हैं। भारत की तीनों सेनाओं में महिलाओं की संख्या 9118 थी। और अब लगातार बढ़ रही है। देश के सबसे ताकतवर विमान राफेल को उड़ाने वाली पहली महिला पायलट शिवांगी सिंह है। महिलाएँ अब हर क्षेत्र में आगे आने लगी हैं। आज की नारी अब जाग्रत और सक्रिय हो चुकी है। किसी ने बहुत अच्छी बात कही है-

''नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों और कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उसे रोक नहीं पायेगी।''

वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। हम सभी जानते हैं कि समाज में व्याप्त पूर्वाग्रहों को तोड़े बगैर एक समता मूलक न्याय संगत समाज का निर्माण नहीं हो सकता इसके लिए हमें रुढ़िवादिता व भेदभाव से मुक्त दुनिया की कल्पना करनी होगी जहाँ चारो ओर समानता का भाव हो। ऐसी दुनिया लैंगिक समानता की दुनिया होगी। हमें अपने समुदायों, अपने कार्यस्थलों अपने विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में रुढ़ियों को तोड़ना होगा। प्रत्येक अवसर पर हमें लैंगिक भेदभाव रुढ़िबद्धता तोड़ने के लिए आवश्यक कार्यवाही करनी होगी तभी समानता स्थापित हो सकेगी।

कोविड-19 के दौरान वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्त्ता के रूप में लगभग 70 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं ने निभाई है। आज महिलाएँ अपनी सूझ-बूझ से सभी चुनौतियों का सामना कर रही हैं।

मैं अबला नादान नहीं हूँ
दबी हुई पहचान नहीं हूँ
मैं स्वाभिमान से जीती हूँ
मैं आधुनिक नारी हूँ।
पुरुष प्रधान जगत में मैंने अपना लोहा मनवाया
जो काम मर्द करते आये हर काम वो करके दिखलाया।
मैं आज स्वर्णिम अतीत सदृश फिर से पुरुषों पर भारी हूँ
जिस युग में दोनों नर-नारी कदम मिलाकर चलते होंगे
मैं उस भविष्य स्वर्णिम युग की एक आशा की चिंगारी हूँ।
मैं आधुनिक नारी हूँ।

डॉ0 अरुण लता वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

''दुबई संस्मरण''

04 जनवरी की सुबह 3:30 बजे पर दिल्ली इंदिरा गाँधी इंटरनेशनल, एयरपोर्ट से शरजाह के लिए परिकल्पना के पंखों ने अपनी उड़ान भरी। हम 5 घण्टे की हवाई यात्रा के पश्चात् शरजाह एयरपोर्ट पहुँचे। शारजाह एयरपोर्ट पर फ्रैश होकर हम डॉ0 पूर्णिमा वर्मन जी के निवास स्थान पर पहुँचे, डॉ0 पूर्णिमा वर्मन जी शरजाह में हिंदी भाषा की भारतीय प्रतिनिधि हैं। विश्व प्रसिद्ध नवगीतकारों में उनका नाम अग्रणीय है। जो जाल पत्रिका, अनुभूति व अभिव्यक्ति पत्रिका की सम्पादिका हैं। जिन्होंने परिकल्पना के संस्थापक डॉ0 रविन्द्र प्रभात जी सहित सम्पूर्ण भारतीय साहित्यकारों का अपने करकमलों द्वारा स्वागत किया व रविन्द्र प्रभात जी के उपन्यास 370 का विमोचन तथा अन्य पुस्तकों का विमोचन किया गया। डॉ0 चंपा श्रीवास्तव ने हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार पर अपने गम्भीर सुझाव प्रस्तुत किये एवं सभी साहित्यकारों को डॉ0 पूर्णिमा वर्मन द्वारा सम्मानित किया गया। जो हम सबके लिए गौरव की बात है। वह परिकल्पना व उसके सदस्यों द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार को देख आश्वस्त हुई। वहाँ आदर व स्नेहपूर्वक जलपान लिया। जिसकी जितनी तारीफ की जाये वो कम है। उन्होंने गर्मागर्म आलू के परांठे हरी मिर्च के अचार व दही के साथ खिलाये, साथ में महीन-महीन जलेबी का क्या कहना अभी तक मुँह में पानी आ रहा है। शरजाह में इस प्रकार हमें घर जैसा भोजन मिलेगा जिसकी कल्पना कम से कम मैंने तो नहीं की थी। डॉ0 पूर्णिमा वर्मन जैसी शख्सियत वास्तव में अपने नाम को सार्थक करती जान पड़ती हैं। पूर्णिमा जी सौम्य चेहरे पर भीनी-भीनी मुस्कान, शालीनता की चादर में लिपटी विश्वास और आत्मनिर्भरता से परिपूर्ण वास्तव में बहुत महान शख्सियत हैं। उनसे मिलकर लगा कि हम अभी भारत में ही हैं। इतना स्नेहयुक्त व्यवहार था हमारे साथ उनका। तत्पश्चात् हम चल पड़े अपने अगले पड़ाव दुबई की ओर .....

05 जनवरी, 2020 की शाम जब हम दुबई पहुँचे होटल में सामान रख नहा धोकर ब्रेकफास्ट के उपरान्त चल पड़े टूर की ओर जहाँ बस में जाते समय गाइड महोदय ने जानकारी दी दुबई के कानून व नियमों के विषय में जो अति आवश्यक था.....

कोई व्यक्ति दुबई में जॉब करके मोटा पैसा कमाने का सपना संजोता है उसके लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि वहाँ ऐसे कौन-कौन से कानून हैं जिनका उल्लंघन करने पर उन्हें जेल की हवा खानी पड़ सकती है। दुबई में कुछ ऐसी भी व्यवस्थाएँ हैं। जिनके बारे में अधूरी जानकारी मुसीबतों का पहाड़ खड़ा कर सकती है। आप दुबई में काम-काज के लिए या फिर घूमने के इरादे से पहुँच गये हैं और आपके पासपोर्ट में किसी भी तरह की गलत जानकारी है, तो समझिए आपको कोई नहीं बचा सकता है। दुबई के कड़े कानूनी नियमों और उनके पालन में कोई कोताही नहीं बरती जाती है। कड़ी पूछताछ की यातना तो आम बात होगी और जेल की सलाखों का तोहफा भी मिल सकता है। बीच में हमारी साथी ने गाइड महोदय से जानकारी के तौर पर पूछा कि दुबई में यदि किसी कारणवश किसी से किसी का खून हो जाये तो उसकी सजा क्या है? महोदय ने बताया कि खून का बदला खून फिर चाहे वो एक्सीडेंट ही क्यों न हो। हाँ अगर मृतक का परिवार चाहे तो उसे उनकी सरकार द्वारा निर्धारित मुद्रा जोकि भारतीय मुद्रा में 60 लाख होती है देनी होगी तभी उसकी माफी सम्भव है। दुनिया के देशों में वादा तोड़ने पर खास प्रतिक्रिया नहीं होती है, कम से कम कानूनी कार्यवाही तो नहीं होगी, लेकिन दुबई में पैसे देने का वादा करना और उसे तोड़ देना सलाखों के पीछे भेज सकता है। अगर आपने किसी को चैक दिया और वह बाउन्स हो गया, तो इसे सामान्य बात नहीं माना जायेगा। आपको इस जुर्म में गिरफ्तार किया जा सकता है, जेल हो सकती है और जब तक आप कर्ज नहीं चुकाएँ दुबई में ही रहना पड़ेगा। दुबई दुनिया के सबसे ज्यादा सुरक्षित और साफ-सुथरे शहरों में से एक है। यह शहर इसलिए साफ-सुथरा नहीं है कि यहाँ सफाई कर्मचारियों की भरमार है, इसका कारण है यहाँ के कड़े नियम। यहाँ-वहाँ थूकना और गन्दगी फैलाने पर भारी जुर्माना भरना पड़ता है। यह सिर्फ नियमों की बात नहीं है, यहाँ नियमों का पालन करवाने में किसी तरह की नरमी नहीं बरती जाती है। कई देशों में धार्मिक आधार पर शराब का सेवन

पूर्णतया प्रतिबन्धित है। हालांकि दुबई में शराब कानूनी तौर पर आसानी से मिल जाती है। आपको दिक्कत यह हो सकती है कि अगर आपने अधिकृत स्थानों की बजाय कहीं और शराब का सेवन किया, तो जुर्माना और चेतावनी दोनों साथ मिलेंगी। दुबई में केवल होटल्स, रेस्टोरेन्ट और बार्स में ही शराब परोसी जाती है वो भी तय लाइसेन्स के जरिये।

दुबई में संयुक्त अरब अमीरात का हॉलीडे कलैंडर लागू होता है। इसलिए यहाँ शुक्रवार और शनिवार के दिन सार्वजनिक अवकाश होता है। मतलब साफ है कि रविवार को आपको काम पर जाना होता है। हालांकि आप अपनी कम्पनी से एडजेस्टमेन्ट करके अपनी छुट्टियाँ तय कर सकते हैं। साथ ही यह भी जान लें कि यहाँ पर ऑफिसेज में 8-9 घण्टे काम करना होता है। अमूमन प्रवासियों को यहाँ साल में 30 दिन की छुट्टी दी जाती है। यहाँ पर हर जगह कैमरा लगे हुए रहते हैं। पुलिसकर्मी कम और कैमरों की संख्या उनसे कहीं ज्यादा। ज्यादातर लोग यहाँ तेज स्पीड पर गाड़ी चलाते नजर आयेंगे, लेकिन इस दौरान थोड़ी सी गलती भारी पड़ जाती है। मुड़ते समय, स्पीड लिमिट चेंज होते हुए और उतार-चढ़ाव वाले रास्तों पर आपको फाइन का सामना करना पड़ सकता है। क्योंकि जिससे पहले आप स्पीड लिमिट के बारे में पढ़ेंगे, उससे पहले तो आपका चालान किया जा चुका होगा और चालान भरने तक तो आपकी गाड़ी को जब्त किया जा सकता है। दुबई में खुल्लम-खुल्ला प्यार का इजहार करना आपको भारी पड़ सकता है। दुबई के नियमों के अनुसार आपको सार्वजनिक रूप से प्यार का इजहार जैसे-किस करना, गले लगने की मनाही है।

अगर आप दुबई में हैं और अविवाहित हैं, तो आप शारीरिक सम्बन्ध नहीं बना सकते हैं। साथ ही अगर आप अपने देश में अपने पार्टनर के साथ सालों से रह रहे हैं और इसके बाद दुबई जाते हैं, तो आप कानूनी रूप से साथ में नहीं रह सकते हैं। इसके बावजूद भी आपने बिना शादी पार्टनर के साथ रूम शेयर किया, तो आपको जेल में डाला जा सकता है। यहाँ आपकी आमदनी पर किसी तरह का पर्सनल और इनकम टैक्स नहीं है न ही कोई टैक्स फार्म है और न ही कोई क्लेम करने का झंझट। मतलब साफ है, जितना आपने कमाया वो सब सिर्फ आपकी दौलत है। एक और शानदार जानकारी आप अपने कमाये हुए पैसे को सीधे अपने देश अपनों को बिना किसी टैक्स के भेज सकते हैं। आपको बस मनी ट्रान्सफर फीस चुकानी होती है।

ये थे दुबई के नियम व कानून

इसके उपरान्त हम सबसे पहले मरीना बीच पहुँचे। दुबई मरीना बिच का एक सम्पन्न रिहायशी इलाका है जो जे0बी0आर0 पर बने बीच के लिए जाना जाता है। यह छुट्टी मनाने की एक जगह है जहाँ खुले में खान-पान की सुविधा और आराम करने के लिए रेतीली जगह है। समुद्र किनारे बने चहल कदमी रास्ते हैं, दुबई मरीना वाक के बाहर बढ़िया कैफे और हाथ से बनाई गई चीजों का बाजार है। सामने दुबई मरीना मॉल है जिसमें गोल्ड की चेन एवं लग्जरी फैशन की बड़े ब्रैंड की दुकानों की भरमार है जहाँ हम लोगों ने कुछ-कुछ खरीद फरोख्त की इंसानों के बनाये समुद्र में महंगी नावें देखी जा सकती हैं। यहाँ स्कॉट ड्राइविंग जैसी गतिविधियाँ आम हैं। फिर हम प्रसन्न मुद्रा में आगे के सफर की ओर चल पड़े।

बुर्ज खलीफा की ओर वहाँ पहुँच मैंने देखा कि अपने हिन्दुस्तान की तरह एक छोटा-सा रेगिस्तान बसा हुआ है। पहले अपने ठंडे हाथों को कपकपी से बचाने के लिए हम सबने गर्म चाय पी, कुछ गर्मी आने पर दुकानों का भ्रमण किया। शुभ बेटे ने और अभिषेक जी ने वहाँ का परिधान खरीदकर पहना और चील को अपनी अंगुली पर बिठाकर तस्वीरें खिचवाई तत्पश्चात् हम सब लोगों ने नकाब ओढ़ा और चल पड़े सफारी को ओर सफारी में बैठने पर सूखी रेत इतनी गहरी कि एक-एक फिट पांव धंसे जा रहे थे, पांव से चप्पल उतार किसी तरह बैठ गये। भयानक ऊँचे-नीचे रेत के टीले पर तेज रफ्तार से दौड़ती सफारी में मैं डर के साथ-साथ आनन्द का अनुभव कर रही थी, मेरी साथी ने ड्राइवर महोदय से कुछ जानकारी लेनी चाही तो उन्होंने चुप रहने को कहा कि यदि उनका ध्यान भटक गया तो गाड़ी रूक जायेगी और कोई जरिया न होगा उसे घसीटने का। हम लोग अपने निर्धारित स्थान पर रूके। वहाँ मेरे साथ डॉ0 सुभाषिनी जी, शिवसागर जी, डॉ0 प्रभा गुप्ता, राजेश कुमारी, डॉ0 सुशीला जी मौजूद रहीं, जहाँ सूर्यावसान का दृश्य अनुपम घटा बिखेर रहा था। हमने वहाँ फोटो लिए। तत्पश्चात् हम नाइट सफारी शो की ओर बढ़े। सबने बहुत मनोरंजन किया तरह-तरह के

व्यंजन जिनकी गिनती कर पाना मुश्किल था, हमने पहले कॉफी ली, पकोड़े, कोल्ड्रिंक, अनाप-शनाप खाते हुए खूबसूरत नृत्य, अग्नि जला कर करतब दिखाते हुए कलाकार, सब लेने के पश्चात् भोजन ग्रहण किया और चल दिये वापस अपने होटल की ओर।

दूसरे दिन हम पहुँचे दुबई के मिरेकिल गार्डन, जो 72000 वर्ग मीटर में फैला हुआ है इसमें करीब 18 एकड़ दायरे में फूल उगे हुए हैं, ये दुनिया का सबसे बड़ा फ्लावर गार्डन है। मिरेकिल गार्डन में 10,000 से भी ज्यादा प्रजातियों के फूलों को देखा जा सकता है। यहाँ ताजमहल का स्ट्रक्चर, मोर, हट, पवन चक्की, डॉल्स, टिकप्स, विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ देखी जा सकती हैं। यहाँ फलों की नदियाँ देखने को मिलती हैं। इस गार्डन में एक बटरफ्लाई गार्डन भी है जहाँ फूलों पर रंग-बिरंगी 15 हजार प्रजाति की तितलियाँ मंडराती रहती हैं। इस गार्डन में एक छोटा सा तालाब भी बना है। गार्डन में फूलों को सींचने के लिए रोजाना 2 लाख गैलन पानी इस्तेमाल होता है। लेकिन यह पानी वेस्ट वाटर होता है, इस विशाल गार्डन में घूमते हुए जब हम थकने लगे तो जगह-जगह कॉफी कार्न, आइसक्रीम आदि के स्टालों पर रूक सबने अपने मन पसन्द उत्पादों का लुत्फ उठाया और पुनः घूमने लगे।

इस प्रकार 18 जनवरी को हम दुबई से प्रस्थान कर बस द्वारा कोच्चि बन्दरगाह पहुँचे जिस दिन भारत बन्द की घोषणा होने के उपरान्त परिकल्पना के संस्थापक, डॉ0 रविन्द्र प्रभात जी ने और उनके सुपुत्र शुभम ने कुछ-कुछ जलपान की व्यवस्था की जिससे हमें बहुत राहत मिली। खैर बोडिंग के पश्चात् हमें क्रूज में एंट्री मिली, और हम पहुँचे अपने दूसरे पड़ाव पर ..... क्रूज का ये मेरा पहला अनुभव था कोस्टा विक्टोरिया में पहुँच हमारी टीम लीडर ने हमें ठहरने के लिए कमरे मुहैया कराये। सामान कर्मचारियों द्वारा सबके ठहराव स्थलों तक पहुँच गया। क्रूज का ये पहला अनुभव मुझे रोमांचित कर रहा था। क्रूज था या भईया भूल-भुलैया बार-बार हम अपने कमरे तक आने के लिए गोल-गोल घूमते रहते।

फिर रविन्द्र प्रभात जी आकर हमें हमारे कमरे की पहचान कराते। उनके व्यवहार की सहजता की जितनी तारीफ की जाये कम है। वरना इतनी बड़ी टीम को सुरक्षित और व्यवस्थित रख पाना शायद ये उन जैसी शख्सियत के ही बस की बात है और माला भाभी का तो कहना ही क्या, संस्था की चेयरपर्सन होने के बावजूद भी वो हम सब में ऐसी घुली-मिली रहीं कि क्या बताऊँ। उनके गोरे चेहरे पर काली लट का बिखर जाना तो गजब ढ़ा रहा था मानों गालों के टिंकल उन्हें चूमने को मजबूर हो रहे हों, और इस तरह परिकल्पना का 12वॉ अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी उत्सव विगत 05 जनवरी, 2020 पहली बार, 10 जनवरी, 2020 को विश्व हिन्दी दिवस पर मालदीव की राजधानी माले से करीब 55 किलोमीटर दूर समंदर क्रूज पर कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 1500 से अधिक श्रोताओं की उपस्थिति रही।

कवि सम्मेलन की अध्यक्षता की श्री शिवसागर जी ने, उसका संचालन राजेश कुमारी राज ने अपनी मन मोहक शायरी द्वारा किया। श्रीमती सत्या सिंह जी ने सरस्वती गान द्वारा सम्मेलन का आगाज किया। सभी कवियों ने जिसमें डॉ0 मीनाक्षी कहकशां, डॉ0 सुभाषिनी शर्मा, अभिषेक जी, डॉ0 प्रभा गुप्ता, डॉ0 अरुण शास्त्री, सत्या सिंह, राजेश कुमारी राज, राजीव जी, क्षमा शिशौदिया जी, डॉ0 सुशीला, आभा जी, डॉ0 ओमकार नाथ द्विवेदी जी, डॉ0 अमोलराय, श्री चंद्रपाल जी, परिकल्पना के कोषाध्यक्ष शुभम और उनके साथियों ने अपना-अपना रुचिकर काव्य पाठ किया, सम्मेलन के अन्त में परिकल्पना की चेयरपर्सन माला चौबे जी ने सबका धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि रहीं जाल पत्रिका, अभिव्यक्ति और अनुभूति की संपादक डॉ0 पूर्णिमा वर्मन तथा समापन सत्र की मुख्य अतिथि रहीं कोस्टा विक्टोरिया की भारतीय प्रतिनिधि सुश्री प्रतीक्षा भावड़ा।

डॉ0 मीनाक्षी सक्सेना
हिन्दी विभाग

शिक्षक के रूप

जैसे भोर काल होने पर सूरज उगता है पूरब से
लोगों के मन को भर देता नव ऊर्जा और स्फूर्ति से
एक शिक्षक भी तो सूरज है जो जीवन के भोर काल से ही
भरता उसमें उजियारा है ज्ञान, विश्वास, प्रगति का भी।

जैसे भरी दोपहरी में जब इंसान गरमी से झुलसे
ऐसे ताप से बचने को विटप छतरी बन जाते हैं
एक शिक्षक भी तो विटप ही है जो जीवन के संघर्षों में
घातों-प्रतिघातों के तापों में ज्ञान की छतरी बन जाता है।

रात्रि के आ जाने पर नभ में जो चन्द्र विराजता है
जीवन के अंधकार में वह शीतल ज्योत्सना भर देता है
एक शिक्षक भी तो चन्द्र ही है जो जीवन की घोर निराशा में
आशा का प्रकाश भर देता है निराशा का तम हर लेता है

जैसे कुम्भकार उस मिट्टी को एक रूप कला का देता है
मिट्टी जो पड़ी धूल में थी वह जान-मान पा जाती है
एक शिक्षक भी तो कुम्भकार ही है मन-मस्तिष्क को संस्कारित कर
जीवन को श्रेष्ठ बनाता है

वह शिष्य के जीवन पथ को सार्थक और सुगम बनाने को
अज्ञानता का तम हर लेता चहुँ ओर प्रकाश फैलाने को
जब सुन लेता वह शिष्य की सफलता की एक कहानी को
जीवन की सार्थकता पा जाता लगता नई कहानी गढ़ने को।।

डॉ0 गीता शर्मा
हिन्दी विभाग

ड्यूटी चुनाव की

चुनाव की अधिसूचना सरकारी कर्मचारियों को मौत की घंटी सी प्रतीत होती है। पीठासीन बनाये जाने वाले तो उसी दिन से जमीन पर सोने, कम व गम खाने का अभ्यास ही करने लगते हैं। इस बार का चुनाव कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर वर्ग को थोड़ी सी तसल्ली दे रहा था। प्रशासन ने रैंक के अनुसार ड्यूटी लगाने का आश्वासन जो दिया था। चुनाव के दो दिन पहले तक मैं भी खुश थी कि प्रशासन की पोलिंग बूथ भेजने की व्यूह रचना से लेकर मच्छरों की फौज का सामना करना व सामग्री जमा करने के लिए जान की बाजी लगाने वाले महाभारत में शामिल नहीं होना पड़ा। अचानक शाम को अपनी सहयोगी से अपनी चुनाव ड्यूटी के लिए मोबाइल पर अपने ग्रुप की सूचना मिलते ही पैरों तले जमीन खिसकती सी महसूस हुई।

पति देव ने जब मुझसे पूंछा कि क्या हुआ ? तो मैंने धीरे से कहा कुछ नहीं'' मेरा जबाव सुन वे बोले फिर शाम को चेहरे पर बारह क्यों बज रहे हैं ? कोई और दिन होता तो पटाखे से फोड़ती पर वक्त की नजाकत समझते हुए उन्हें सारी बात बताई। मेरी बात सुन उन्होंने सुलझे से अंदाज में कहा '' पहले ये तो देखो कि कौन सी ड्यूटी है''उनकी बात सुन मोबाइल पर ड्यूटी देखते ही जमीन धंसे पैर खुशी के मारे छलांग लगाने लगे।

अगले दिन सवेरे कलेक्ट्रेट पहुँची। सरकारी काम-काज तो सब जानते ही हैं कैसे होता है ? घंटों वहाँ बैठकर अपनी टीम से फोन पर सम्पर्क करने का प्रयास करती रही। जब किसी से भी सम्पर्क न हो सका तो सम्बन्धित अधिकारी को सूचित किया। पूरी बात सुन उसने कहा '' मैडम आप चिन्ता न करें। आपकी गाड़ी आने पर आपको सूचित कर दिया जायेगा। अपनी सहयोगियों के साथ बैठे हम भावी ड्यूटी के बारे में सोंच विचार करते रहे। अचानक अपनी गाड़ी के आने की सूचना पाकर दिल घबरा सा गया। घबराहट इसलिए थी कि हम पाँचों में सबसे पहले मुझे जाने का आदेश हुआ। दिल में छाये आशंका के कुहासे को हटाती हुई मैं गाड़ी की तरफ बढ़ चली।

वहाँ पहुँचकर एक सब इस्पेक्टर व दो हैड कांस्टेबल को गाड़ी के पास खड़े देख गाड़ी के समीप पहुँची परिचय प्राप्त होते ही जब हैड कांस्टेबल ने मुस्तैदी से मजिस्ट्रेट मैडम कहते हुए गाड़ी का दरबाजा खोला तो दिल गार्डन-गार्डन हो गया। अपने एरिये में पहुँचकर पोलिंग बूथ पर जा ड्यूटी पर तैनात टीम की समस्याएँ सुन उनके समाधान किये तो गर्व सा महसूस हुआ। पोलिंग वाले दिन ग्रुप पर मोबाइल हाथ में देख जब कोई पुलिस वाला कहता। मोबाइल नहीं तो संग में तैनात तीनों में से कोई कहता ''मजिस्ट्रेट मैडम हैं'' सुनते ही सम्मान सहित अन्दर ले जाते यूँ करते कराते ड्यूटी समाप्त कर जब घर वापस आई तो मन में दो ही ख्याल आये।

1. चाँदनी चार दिन की ही नहीं दो दिन की भी हो सकती है।
2. भय, डर या दहशत इस ड्यूटी के समान सुखद भी हो सकती है।

डॉ0 बीना शर्मा
(हिन्दी विभाग)

आधुनिकता और विध्वंस

आधुनिकता सामाजिक परिवर्तन की वह प्रक्रिया है, '' जिससे कम विकसित समाज विकसित समाजों की सामान्य विशेषताओं को प्राप्त करते हैं।'' अधुना से आधुनिक शब्द की व्युत्पत्ति मानी गयी है जो प्रवाह मान है। वह आधुनिक है जो समय की चेतना से जाग्रत है वह आधुनिक है। सामान्य अर्थ में कहा जाये तो समयानुसार ज्ञानवर्द्धन करना (Up to date) रहना ही आधुनिकता है। समाजशास्त्रीय शब्दों में आधुनिकता अतीत से स्वप्रेरित प्रथकता और नवीन भावों के अन्वेषण की प्रक्रिया है। आधुनिकता तिथियों पर नहीं बल्कि दृष्टिकोण पर आधारित होती है। शहरीकरण से आधुनिक युग का प्रारम्भ हुआ, औद्योगिक क्रान्ति से इसमें व्यापक प्रगति हुई। इससे न केवल विद्यमान रुढ़िवाद की समाप्ति हुई बल्कि सामाजिक स्तर पर रहन-सहन के ढ़ंग में भारी परिवर्तन आया। आधुनिकता का सीधा प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ा है इससे उसका जीवन अधिक एकांकी हो गया है पहले परिवार, समाज सभी एकता के सूत्र में बंधे हुए थे किन्तु आज सभी संस्थाएँ स्वतन्त्र हो गई हैं जो अपने तुच्छ स्वार्थ सिद्धि में लीन हैं। हमारी संस्कृति विभिन्न प्रभावों का जमघट बन गई है। कार्यों की पृथकता, आत्मा की पृथकता बन गई है। आधुनिक व्यक्ति का जीवन आत्मिक एकता की नहीं बल्कि एक शरीर में कई रूपों की कहानी बन गया है। संक्षिप्त शब्दों में कहें तो, '**नित नये की ओर अग्रसर होती दुनिया का चित्र**' ही आधुनिकता है। नैतिकता आदर्श और मूल्यों की बदलती दुनिया में आधुनिकता एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसमें रूढ़ियों और परम्पराओं से मुक्ति के दरबाजे खुलते हैं और तर्क व ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है।

समकालीन दुनिया की सर्वग्रासी बाजारू प्रवृति जो धार्मिक अंधविश्वास और नैतिक पतन की कोशिशों के साथ है उसे ही आधुनिक मान लेना एक ढ़कोसले के साथ खड़ा कर लेना है। स्वस्थ जनतंत्र के बिना स्वस्थ आधुनिकता का भी कोई स्पष्ट स्वरूप नहीं उभर सकता। आधुनिकता के नाम पर सामाजिक और सांस्कृतिक पतन के आदर्शों से भरी व्यवस्था के चरित्र की पहचान, बिना प्रासंगिकता के सम्भव नहीं। साहस और बेबाकीपन के आधुनिक मुहावरों को तर्क का आधार बनाकर बहुत सस्ते में भौतिक वर्जनाओं से भरी अभिव्यक्तियों को, इसीलिए आधुनिक नहीं कहा जा सकता, ये तो मानव को भटकाने का काम करती है। आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप ऐसे लोगों की संख्या बढ़ गई जो अपने जन्म स्थान व माता-पिता से दूर अन्य शहरों में नौकरी और व्यवसाय करने लगे या उच्च शिक्षा हेतु जाने लगे। आधुनिकता के दौर में सभी कलाओं में लौकिक शास्त्र का पतन दिखाई पड़ा। जैसे- चित्रकला में अग्रभूमि और पृष्ठभूमि का भेद, संगीत में गीत और वाद्य्य का भेद आदि कला की भिन्न विद्याओं का भेद टूटने लगा। कला स्वैच्छिक होती गई और कलाकार का महत्व बढ़ने लगा। पहले दर्शक कलाकार को नियंत्रित करते थे अब कलाकार दर्शकों पर हावी होने लगे। चित्रकार, लेखक, फिल्म मेकर अब समाज से प्रभावित होने के बजाय समाज को प्रभावित करने लगे। इस प्रकार आधुनिकता की आड़ में वे 'विध्वंस' को कला के द्वारा सम्मान देने का प्रयास करने लगे जो मानव जीवन में कई रूपों में दिखाई देने लगा।

आधुनिकता का संकट इतना सशक्त है कि वह व्यक्ति के विचार प्रवाह में बाधा डालता है। इससे मनुष्य में असन्तुष्टि उत्पन्न होती है। आधुनिक मानव की स्थिति त्रिशंकु के समान होती है। जहाँ अर्थ का कोई सिद्धान्त नहीं और घटनाओं का कोई मूल्य नहीं होता है। यहाँ कोई नैतिक संस्था नहीं है जिससे राय ली जा सके। आधुनिक युग की अनिवार्यताएँ इतनी अधिक पीड़ादायक और विडम्वनापूर्ण हैं कि उनसे आधुनिक व्यक्ति भी बच नहीं सकता। उसकी सहज श्रद्धा, विवशता की श्रृंखला में बदल चुकी है। पहले समाज में व्यक्ति के जीवन में जो कुछ भी होता है या होगा ईश्वर की इच्छा पर आधारित मानकर जीवन जिया जाता था लेकिन आज (आधुनिकता के युग में) जब घटनाएँ बहुमत के आधार पर स्वामियों के आदेश और कुछ स्वार्थी व्यक्तियों के निर्णयों पर आधारित होती हैं तो भी उन्हें पूरा करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। वह विजय प्राप्त करने में तो समर्थ होता है। लेकिन सन्तुष्टि उसके नसीब में नहीं होती है। इस प्रगतिपरक समाज में आधुनिक व्यक्ति के पास किसी प्रकार सतही आनन्द के लिए समय और ऊर्जा का अभाव रहता है। वह अपनी आधारभूत समस्याओं को सुलझाने में ही व्यस्त रहता है उसका जीवन-दर्शन गगनचुम्बी इमारत के समान है जिसके निर्माण और भार सहने योग्य बनाने के लिए पर्याप्त परिश्रम किया जाता है। वह इतनी नयी होकर भी जल्द ही आकर्षणहीन हो जाती है। आधुनिकता के इस दौर में हमारी भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य एवं मानवता के लिए विध्वंस का भय भी उत्पन्न हो गया है।

डॉ0 विमलेश यादव
समाजशास्त्र विभाग

भारतीय अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता

भारतीय अर्थव्यवस्था मनुष्य से वर्तमान समय में भी कृषि पर ही आधारित है। स्वतन्त्रता के 75 वर्ष के बाद भी रोजगार, जनसंख्या निर्भरता, खाद्यपूर्ति के लिए भारतीय कृषि के योगदान में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। 1970 के आस-पास, हरित क्रान्ति ने कुछ परिवर्तन तो किया किन्तु वह भी अपर्याप्त सिद्ध हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में विशेष रूप से सन् 2020 से हमारी अर्थव्यवस्था विशेष परिस्थितियों का सामना कर रही है। कोविड-19, लॉकडाउन इत्यादि परिस्थितियों में, जब सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था निष्क्रिय हो गई थी तब विश्वस्तर पर यह महसूस किया गया कि सभी देशों को अपने संसाधनों पर अधिकाधिक निर्भर रहना चाहिए। और इस स्थिति में भारतीय अर्थव्यवस्था द्वारा ''**आत्मनिर्भर भारत**'' अभियान को प्रोत्साहित किया गया।

''आत्मनिर्भरता'' शब्द का अर्थ अर्थशास्त्री भारतीय अर्थव्यवस्था की विश्व के अन्य देशों पर निर्भरता को कम करना मानते हैं। ''आत्मनिर्भरता'' तथा ''स्वदेशीकरण'' में भी अन्तर है। समस्त विश्व से अपने सम्बन्धों को पूर्णतए: समाप्त करना ही आत्मनिर्भरता नहीं हो सकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन द्वारा आत्मनिर्भरता शब्द को और अधिक स्पष्ट किया गया। उनके अनुसार, ''आत्मनिर्भरता से तात्पर्य यह है कि स्वयं के पास उपलब्ध संसाधनों का उचित दोहन व उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जाये और अधिक निर्यात व कम से कम आयात किया जाये। वित्त मंत्री ने यह माना है कि हमें विदेशी तकनीकी ज्ञान व उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद, प्रत्यक्ष विदेशी विनियोग इत्यादि के लिए अपने देश की सीमाओं को बन्द नहीं करना है। स्वदेशीकरण को प्रोत्सहित तो करना है परन्तु निम्न गुणवत्ता, निम्न उत्पाद वाली वस्तुओं को सुरक्षा प्रदान नहीं करनी है। अर्थात् आत्मनिर्भर भारत अभियान में हमें विदेशों से प्राप्त उच्च गुणवत्ता, निम्न लागत और आधुनिक तकनीक पर आधारित उत्पाद को प्रोत्साहित करना है और उनका उत्पादन भारतीय भूमि पर हो इसका प्रयास करना है।

कोविड महामारी ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को सजग किया कि उन्हें अपने संसाधनों को परिष्कृत और विकसित करने का प्रयास करना चाहिए और आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करना चाहिए। आत्मनिर्भरता के लिए मुख्य रूप से पाँच क्षेत्र माने जो एक दूसरे से जुड़े हैं। ये क्षेत्र क्रमश: निम्न हैं। 1. अर्थतन्त्र 2. आधारभूत ढांचा 3. व्यवस्था 4. जनतांत्रिकी संरचना 5. मांग

स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थानीय क्षेत्रों में ही विकल्प खोजना ही वास्तव में आत्मनिर्भरता है। सूक्ष्म रूप से, ग्रामीण क्षेत्र अपने उत्पाद की मांग व पूर्ति में सामंजस्य ग्रामीण स्तर पर ही करें। फिर जिला स्तर पर, और फिर राज्य स्तर पर अपने संसाधनों की मांग और पूर्ति में सामंजस्य स्थापित किया जाये। सरकार द्वारा Vocal for Local का विचार दिया गया। और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में इस विचार का विशेष महत्व है।

आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए सरकार पाँच चरणों में प्रयासरत है। प्रथम चरण में, रोजगारपरक व्यवसायों को महत्व दिया गया है। द्वितीय चरण में, गरीब, किसान, प्रवासीय जनसंख्या को सुविधा प्रदान करना है। तृतीय चरण में कृषि को आधुनिक

बनाने का प्रयास है। चौथे चरण में विकास की गति को कृषि औद्योगिक क्षेत्र में तेज गति प्रदान करना है और अन्तिम अर्थात पाँचवे चरण में सरकारी सुधारों, सुविधाओं व सहायता में विस्तार प्रदान करना है। भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए कृषि व विनिर्माण क्षेत्र को विशेष महत्व देना होगा। कोविड-19 महामारी के समय जब समस्त आर्थिक क्रियाएँ रूकी हुई थीं तब केवल कृषि क्षेत्र में वृद्धि दर धनात्मक रही और अर्थव्यवस्था को संजीवनी देने में समर्थ रही। अन्य क्षेत्र खासकर विनिर्माण क्षेत्रों में वृद्धि दर ऋणात्मक रही। जिसे हमने श्रमिक के पलायन के रूप में स्पष्ट रूप से देखा है। इसीलिए अर्थव्यवस्था के इंजन को विकास रूपी गति देने के लिए सरकार प्रयासरत है जिसके लिए कृषि और विनिर्माण क्षेत्र को विशेष रूप से विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र और विनिर्माण क्षेत्र विशेषकर छोटे, मझोले व कुटीर उद्योग मुख्य रूप से रोजगारपरक क्षेत्र हैं। अत: सरकार इन क्षेत्रों को सरकारी सहायता तथा विशेष पैकेज योजनाओं की घोषणाएँ करके इन क्षेत्रों में उद्यमशीलता व विनियोग को प्रोत्साहित कर रही है। जनसांख्यिकी लाभांश का उचित दोहन और प्रयोग करना सरकार के लिए एक चुनौती है।

आत्मनिर्भरता श्रमशक्ति की आय और उत्पादकता में सुधार पर निर्भर करती है। कृषि क्षेत्र में अनाज आधारित उत्पादक क्रियाओं को नकदी फसलों, बागवानी, पशुधन, मत्स्य इत्यादि क्रियाओं की ओर स्थानान्तरित करने उत्पादक क्रियाओं को बढ़ाया जा सकता है। 1970 के समय जो हरित क्रान्ति आई उससे कृषक समुदाय की आय में वृद्धि हुई और उन्होंने श्रम प्रधान औद्योगिक वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई । अर्थात् कृषि क्षेत्र की आय और कुल मांग में वृद्धि हुई जिसका लाभ चीन के विनिर्माण क्षेत्र को मिला। हम इस लाभ को भारतीय विनिर्माण क्षेत्र की ओर मोड़ना होगा इसलिए ही सरकार ''वोकल फॉर लोकल'' और ''चलो गाँव की ओर'' का नारा दे रही है। साथ ही साथ कृषि क्षेत्र में जो श्रम आधिक्य है उसे विनिर्माण क्षेत्र की ओर स्थानान्तरित करना होगा। भारत की आत्मनिर्भरता इस तथ्य पर भी आधारित है कि श्रमशक्ति जिसकी औसत आयु 27 वर्ष के आसपास हो और जिनकी संख्या 900 मिलियन हो उन्हें उत्पादक क्रियाओं में किस प्रकार समायोजित किया जाये जिससे वे मांग उत्पन्न करने में समर्थ हों। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि श्रम प्रधान विनिर्माण क्षेत्र ही बड़े पैमाने पर रोजगार, आय और मांग में वृद्धि कर सकते हैं। इसलिए सरकार छोटे लघु कुटीर उद्योग को सहायता करने का अधिकाधिक प्रयास कर रही है।

अन्त में सिर्फ इतना ही, मेरा भारत सक्षम और सुदृढ़ हो, आत्मनिर्भर बने इसके लिए कृषि और विनिर्माण क्षेत्र में सामंजस्य के साथ-साथ आधारभूत संरचना पर भी अधिक से अधिक काम करने की आवश्यकता है और सरकार प्रयासरत भी है। भविष्य सुनहरा है, ''मेरा आत्मनिर्भर भारत''

डॉ0 रेनू सिंह राना
एसोसिएट प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग
एम0एम0एच0 महाविद्यालय
गाजियाबाद

नौकरी

बड़ी हसीन है तू ऐ ! नौकरी
सारे युवा तुझपे ही मरते हैं।
सुख–चैन खोकर चटाई पर सोकर
सारी रात जागकर पन्ने पलटते हैं,
दिन में तहरी रात मे मैगी
आधे पेट ही खा तेरा नाम जपते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।
अंजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेकर
किचन, बैडरूम सब उसी में बसर करते हैं
चाहत में तेरी अपने माँ–बाप और
दोस्तों से दूर रहते हैं।
सारे युवा तुझपे ही मरते हैं
राशन की गठरी सिर पे उठाये
अपनी मजबूरियाँ खुद ही छिपाये
खचाखच भरी ट्रेन में बिना टिकट के
रिस्क लेकर आज सफर करते हैं
सारे युवा आज तुझपे ही मरते हैं।
इन्टरनेट अखबारों में तुझको तलाशते
तेरे लिए पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ते–पढ़ते
बत्तीस साल के जवान कुँवारे फिरते हैं
तू कितनी हसीन है ऐ ! नौकरी
सारे युवा तुझपे ही मरते हैं।

वरूण तोमर
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष
बॉयोलोजी

हिंदी

हर सुकुन है मेरा हिंदी
हर ख्वाब है मेरा हिंदी
आचरण है मेरा हिंदी
भाषा है मेरी हिंदी
हृदय का अंश है हिंदी
जीवन की आकांक्षा है हिंदी
स्वप्न है मेरा हिंदी
जीवन है मेरा हिंदी
जन्म है मेरा हिंदी
मरण है मेरा हिंदी
दु:ख है मेरा हिंदी
सुख है मेरा हिंदी
अधिगम है मेरा हिंदी
अस्तित्व है मेरा हिंदी
ज्ञान है मेरा हिंदी
संसार है मेरा हिंदी
मेरा सुकून है हिंदी
मेरा जीवन है हिंदी
मेरी भावनाएँ हैं हिंदी
मेरी माँ है हिंदी

वीरेन्द्र सिंह
एम.ए. प्रथम सेमिस्टर

मानवता

याद रखो दुनिया वालों, जब भी धरती पर युद्ध हुआ।
हाँ जीत–हार तो हुई मगर, मानवता के विरुद्ध हुआ।।

इंसान बनाकर हम गोले, इंसानों को ही मार रहा।
दुश्मन आपस में बन बैठे, मानवता में न प्रेम रहा।।

कोई लड़े देश की रक्षा में, कोई लड़े ताकतवर दिखने को।
लोगों की जान की कीमत न, यहाँ हथियार पड़े हैं बिकने को।।

इंसान अपने द्वारा निर्मित हथियारों से छुपता है,
ये देख भयावह दृश्य बताओ, किसका मन नहीं दु:खता है? ?

रौनक पवार
एम.ए. द्वितीय सेमिस्टर
पोलिटिकल साईंस

''उम्र से कई साल बड़ा हूँ''

मैं उम्र के अनुसार नहीं हालात के हवाले जीता हूँ।
वक्त से पहले हादसों से लड़ा हूँ।
इसलिए मैं अपनी उम्र से कई साल बड़ा हूँ।

जिन कन्धों पे स्कूल का बस्ता होना चाहिए।
जिम्मेदारियों का मैं भारी थैला रखता हूँ।
बीस रूपये का चना गरम जो बेचता हूँ।
हर रोज अपने बचपन का सौदा करता हूँ।
गाड़ी या गुड़िया जैसे खिलौने शायद
मेरे मुक़द्दर में नहीं साहब
मैं चाकू छुरी से उँगलियों का तालमेल रखता हूँ।

वक्त से पहले हादसों से लड़ा हूँ।
मैं अपनी उम्र से कई साल बड़ा हूँ।
मेरी हथेलियों पे तुम मत जाना उम्र चाहें,
छोटी हो मेरी, तजुरबा तुमसे ज्यादा रखता हूँ।
वक्त से पहले हादसों से लड़ा हूँ।
मैं अपनी उम्र से कई साल बड़ा हूँ।

सूरज कमल
एम0एस0सी0 प्रथम सेमेस्टर (कैमिस्ट्री)

बेरोजगारी

भारत पहले सोने की चिड़िया के रूप में जाना जाता था। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद बहुत सारी समस्याएँ सामने आने लगीं जैसे–लोगों के आवास की समस्या, रोजगार आदि और यह आज तक चली आ रही हैं। आज भारत में बेरोजगार इतना बढ़ गया है कि हर तीसरा व्यक्ति बेरोजगारी का शिकार है। बेरोजगार का अर्थ यह होता कि जो व्यक्ति काम करने के योग्य है, वह काम करना चाहता है परन्तु उसे कोई काम नहीं मिल रहा। बेरोजगारी के कई कारण हो सकते हैं जैसे–

जनसंख्या वृद्धि :– यह एक महत्वपूर्ण कारण है। जनसंख्या बढ़ने के कारण संसाधनों में कमी होती गई जिससे परिवार में हर एक बच्चे को ठीक से शिक्षा का अधिकार नहीं मिल पाया। आज भी भारत में अधिकतर जनसंख्या अशिक्षित है और बेरोजगार है। परिवार में ज्यादा बच्चों के चलते हर किसी को शिक्षा देने में माता–पिता सफल नहीं हो पाते जिसका परिणाम यह हुआ कि बेटियों को शिक्षा से वंचित रखा गया या परिवार में बड़ा होने के कारण शिक्षा छोड़कर मजदूरी करनी पड़ी।

मशीनीकरण में वृद्धि :– औद्योगिकीकरण के विकास के चलते लाखों कलाकार, श्रमिक बेरोजगार हो गये। पहले भारत में हस्तकला का काम किया जाता था जिससे कलाकार अपनार रोजगार चलाते थे, अब उसकी जगह औद्योगीकरण ने ले ली है। कारखानों में मशीन के विकास के कारण जो श्रमिकों की काम करने में जरूरत होती थी, वह भी खत्म हो रही है जिससे मजदूरों को भारी नुकसान झेलना पड़ा।

शिक्षा का अभाव :– भारत में आधी जनसंख्या अशिक्षित है जिससे वे दूसरा कोई काम करने में असमर्थ हैं। जो लोग कारखानों में काम करते थे, जब कोरोना महामारी आई तब पूरा देश बन्द हो गया था उस समय मजदूरों के व्यवसाय छिन गये, जो लोग ठेली लगाते थे वे भी बेरोजगार हो गये। ऐसे में इन लोगों के पास कोई और रास्ता नहीं था, गाँव जाने के अलावा। यदि ये लोग शिक्षित होते तो ये कोई नया काम शुरू कर सकते थे, ऑनलाइन के माध्यम से परन्तु उन्हें अपना सब लेकर अपने गाँव वापस जाना पड़ा।

बेरोजगारी दूर करने के लिए सरकार को काम करना होगा क्योंकि लॉकडाउन की वजह से भारत की आर्थिक व्यवस्था बहुत ही खराब हो गई है। जनसंख्या नियंत्रण पर ध्यान दिया जाये तथा यह बात गाँव, कस्बों, शहरों में लोगों तक पहुँचाने का काम किया जाये। शिक्षा प्रणाली को बेहतर किया जाये तथा यह भी सुनिश्चित किया जाये कि हर एक बच्चे को उच्च शिक्षा प्राप्त हो। लोगों को जागरूक किया जाये ताकि वे अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने से न रोकें। देश भर में संसाधनों को बेहतर तथा बढ़ाया जाये। उद्योग को बढ़ावा दिया जाये लोगों को नये–नये कमाने के अवसर बताये जायें तथा बेरोजगारी दूर करने के लिए सरकार को नये–नये फैसले लेने चाहिए। जिससे भारत भी बेरोजगारी से दूर चला जाये। सरकार द्वारा नौकरी में कटौती से जिन कर्मचारियों की छटनी की जा रही है, उन्हें अन्य क्षेत्रों में रोजगार की व्यवस्था सरकार को करनी चाहिए। सरकार द्वारा स्वरोजगार हेतु उचित मार्गदर्शक, आर्थिक मदद, ग्राम पंचायत स्तर पर करनी चाहिए।

साक्षी शर्मा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
बॉयोलोजी

मेरा बचपन

देखता हूँ जब बच्चों का लड़कपन
याद आता है मुझे मेरा बचपन।
सोचता हूँ फिर से बच्चा बन जाऊँ,
हर वक्त धमा चौकड़ी फैलाऊँ,
तोतली जवान से पापा चिल्लाऊँ
पर वो तो जादू की छड़ी कहाँ से लाऊँ।
जिससे फिर से बच्ची बन जाऊँ,
याद आता है फिर से वह समय
जब दोस्तों के साथ खेलता निर्भय।
माँ के डाँटने पर खेल छोड़कर भाग जाता था
खाना खाकर जल्दी से जाता था।
देखता हूँ जब बच्चों का लड़कपन
याद आता है मुझे मेरा बचपन।
खिलौनों की जिद किया करता था
जब मेलों में घूमा करता था।
घूमने पापा के कंधों पर जाया करता था
गुब्बारे और खिलौने लिवाया करता था।
देखता हूँ जब बच्चों का लड़कपन
याद आता है मुझे मेरा बचपन।

यश कुमार
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
गणित

हौंसला

हे नवयुवकों देश के प्रश्न पूछती मैं आप से,
क्या आप धरा पुत्र नहीं, क्या आपका कर्त्तव्य नहीं,
कि आप बने पहरेदार, अजर-अमर हिन्दुस्तान के।
हे नवयुवकों देश के! फिर कहती मैं आपसे,
है तन मिला मनुष्य का, हमें बड़े ही भाग्य से,
मरना ही है हमें एक ना एक दिन तो क्यों न मरे देश पे।
हें शत्रुजंय देश के! तुम पहले हो मातृ से
तुम बढ़े रज-मातृ से, अब उठो जोश से,
हाथ में तलवार लिए, आकाश-पाताल छान दो
मिले यदि शत्रु कहीं फिर धड़ से काट दो।
हे मृत्युजंय देश के! तुम भाग्य विद्याता देश के
हो तुम बड़े ही सख्त, जब तक रहे तन में
एक बूँद भी रक्त सिर नहीं झुके कभी
कदम रहे डटे वहीं
यदि पड़े कम हौंसला धैर्य नहीं तुम छोड़ना,
दिल के अन्दर झाँकना व स्वयं से यह कहना
मैं वही वीर हूँ, मैं वही शहीद हूँ।
जो हुआ अमर कभी, मातृभूमि की गोद में
था लिया स्थान कभी इतिहास के पेज में।
तब लड़ोगे जोश से अगर कहीं तुम मर गये
मर के भी अमर हो गये होंगे जुबां पे तेरे नाम
हौंसला बढ़ाती वीरों की अब लेती मैं विराम।

खुशबू वर्मा
बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष

जल बूँद

हे पृथ्वीवासियो! हे भोग विलासियो
स्वयं भोग में न लीन हो
जल की हर एक बूँद
जीवन की अस्तित्व मूल।
हे पृथ्वीवासियो! व्यर्थ जल न व्यय करो
रक्षा कर जल बूँद की
भावी पीढ़ी का अस्तित्व रचो।
प्रकृति प्रति धर्म भूल गये
विज्ञान के सब खेल से
आलस्य बना मनुष्य को
ला खड़ा किया इस मोड़ पे।
एक तो वो वक्त आयेगा
जल बिना कंठ सूख जायेगा।
ढूँढ़ लोगे धरा के कण-कण
जल बूँद जल बूँद नजर न आयेगा।
घटना खूब हृदय विदारक तम सा छा जायेगा।
धरा जीवों की कहानी यहीं खत्म हो जायेगी।
हे पृथ्वीवासियो!
हो चाहते तुम यदि आये न ऐसा वक्त कभी
बूँद जल को तुच्छ समझ व्यर्थ उसे करो नहीं।

हार के आगे जीत है

असफलता से निराश होकर
है भटका किस मार्ग में,
है तुझे भय कैसा
जब कोटि प्रयासों तेरे साथ में।
कौन कहता है तू हार गया
प्रगति मार्ग अवरुद्ध हुआ
परिणाम न देख तू कर्म कर
हार के आगे जीत है
यही तो सत्य नीति है।
ना लक्ष्य कोई प्राप्त किये
बिना असफलता के स्वाद चखे
असफलता एक आवश्यक अंग
कायारूपी जीवन का,
गम्भीरता से मनन करो तुम
नवजीवन बना सुलभ
उन्हीं असफल प्रयास से।
हार के आगे जीत है,
यही तो सत्य नीति है।
जब तक मिले लक्ष्य तुझे
चैन की न सांस ले
सूर्य-शशि को एक कर
लक्ष्य को तू प्राप्त कर
चाहे टूट बरस पड़े
असफलता का कितने पहाड़
हारने को मजबूर करे
असफलता का यह चिंगार
परिणाम चाहें जो हो
पर कर्म तुम्हारा श्रेष्ठ हो
हार के आगे जीत है
यही तो सत्य नीति है।

खुशबू वर्मा
बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष

धरती को माँ का दर्जा दिया

भारत की माटी भी सोना,
जिसने वीरों को जन्म दिया
देश है ये सबसे निराला,
धरती को भी माँ का दर्जा दिया
इतिहास गवाह है तुम भी जानो,
सर ना हमने कभी झुकने दिया,
जान है इस वतन की शान
सपूतों ने अपना सिर कटवाना मंजूर किया।
देश है ये सबसे निराला,
धरती को भी माँ का दर्जा दिया
इस देश की लाज के खातिर
भगवान ने भी कहाँ विश्राम किया
राम, कृष्ण हो या हो दुर्गा
मानव का अवतार लिया
देश है ये सबसे निराला,
धरती को भी माँ का दर्जा दिया
राणा के चेतक ने भी
यहाँ माँ का नाम किया।
थे शिवा और लक्ष्मीबाई
दुश्मन का संहार किया
देश है ये सबसे निराला,
धरती को भी माँ का दर्जा दिया
आँख न उठा ए दुश्मन,
वतन की लाख आँखों ने यह बोल दिया।
भारत की माटी भी सोना,
जिसने वीरों को जन्म दिया।
देश है ये सबसे निराला,
धरती को भी माँ का दर्जा दिया

सलोनी कुमारी
बी.कॉम तृतीय वर्ष

संघर्ष भरी नारी

क्यों तेरे आँख में आँसू है।
क्यों तेरे चारो तरफ अँधेरा है
डर मत तू थक मत तू
करती रहे मेहनत क्योंकि गहरी रात
के पीछे छुपा तेरी रोशनी का सवेरा है।
चाहे लाख जकड़े ये पाबंदी तुझे
डर मत-ए मर्दानी।
क्योंकि जिसके कदम लड़खड़ाएँ,
वो कभी रच नहीं पाया कहानी।
हालातों के शीशे को तोड़,
आगे बढ़ ए-बहता हुआ पानी।
परेशानियों का सामना कर बनकर झाँसी की रानी।
तू हिम्मत तो कर सामने खुला आसमान है।
तू कोशिश तो कर झुकेगा ये जहाँ है।
बन के आजाद परिन्दा चीर दे हर तूफान को।
बन के फौलादी चट्टान जीत ले हर मुकाम को।
कुछ करने की अब तू ठान ले।
जो सपना है तेरा उसे अपनी हकीकत मान ले।
अगर रोकने आयें ये दुनिया वाले
तो उनके सामने अपना चट्टान सा सीना तान ले।
एक वो दिन भी आयेगा जब,
चारो ओर तेरा नाम होगा।
एक वो दिन भी आयेगा जब,
सबके दिल में तेरे लिए सम्मान होगा।
गुजरेगा हर लम्हा वो दु:ख का,
तब समझ लेना तेरे पास भी उड़ने के लिए
एक मुट्ठी नहीं पूरा खुला आसमान होगा।
ये अंत नहीं है तेरे संघर्ष का
ये तो बस आगाज है।
हजारो लोग आयेंगे तुझे गिराने के लिए
पर तू रूकना नहीं, तू थकना नहीं।
आगे बढ़ती रहे उसे पतंग की तरह
जिसकी डोर किसी को काटना आता नहीं।

सुनयना
बी.एस.सी. बॉयो प्रथम सेमिस्टर

2047 में मेरे सपनों का भारत

परिचय:- मैं भारत देश की एक नागरिक हूँ। मैं 2047 में अपने सपनों का भारत महान देश के तौर पर कल्पना करती हूँ। हमारा देश अंग्रेजों के 200 वर्ष तक गुलाम रहा इससे भी पहले गुलाम वंश ने भारत पर गुलामी की। आज हमें 75 साल आजादी के हो गये हैं। हमारे महान पुरुषों ने तथा नारियों ने योगदान दिया है। तभी हम आज आजादी का 75वॉ साल आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। 25 सालों बाद सपनों का भारत कैसा होना चाहिए ?

2047 में मेरा भारत जात-पात और ऊँच-नीच के भेदभाव से मुक्त होगा :- मेरा भारत 2047 तक जात-पात, गरीब-अमीर, ऊँच-नीच के भेदभाव से मुक्त हो जाये। हर मनुष्य को उसके लिए अधिकार और सम्मान का जीवन मिले।

2047 में मेरा भारत शिक्षित होगा:- हर एक माता-पिता शिक्षा को समझे और अपने बच्चों को शिक्षित करे। शिक्षा पर हर किसी का अधिकार है। चाहें वे गरीब हों या अमीर हों किसी भी जाति का हो लड़का हो या लड़की हो। या कोई अन्य लिंग का हमारे भारत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षा हो एक ऐसा जिसने शिक्षा को लेकर पहने नाम हो। भारत शिक्षा का पहला स्थान होगा, किसी भी बच्चे के साथ शिक्षा में जाति-पात का भेदभाव नहीं होगा, ऐसा होगा मेरे सपनों का भारत।

2047 में मेरा भारत पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त होगा:- मेरे भारत का हर एक व्यक्ति जो दिल का मरीज, दमा का मरीज है वे 25 साल बाद प्रदूषण मुक्त हो स्वस्थ रहें। प्रकृति को अपनाये प्रदूषण मुक्त हो जायें। जिस तरह से हमारे भारत देश में पर्यावरण को बचाने के लिए मुहिम चला। चिपको आन्दोलन यह आन्दोलन इसका नेतृत्व करने वाले प्रसिद्ध सुन्दरलाल बहुगुणा ने आन्दोलन किया। उनका उद्देश्य यह था कि पर्यावरण की सुरक्षा रखना इसी सपने को सच कर दिखाना है।

2047 में मेरा भारत महिला सशक्तिकरण :- महिलाओं का अधिकार सम्मान उनको मिल जाना चाहिए जितना पुरुषों को है समाज में उतना ही अधिकार नारी को भी होगा। पुरुषों के बराबर साथ चलेंगी नारी।

2047 में मेरा भारत रोजगार के अवसर:- मेरे देश का कोई युवा बेरोजगार न रहे। सबको रोजगार मिले जो इस समय बेरोजगारी की समस्या है वह आने वाले समय में न रहे। हर युवा रोजगार हो।

2047 में मेरा भारत भ्रष्टाचार मुक्त होगा :- मेरा देश इस समय भ्रष्टाचार की जंजीर में जकड़ा है आने वाले युवा भ्रष्टाचार को नष्ट कर दें। अच्छे नेता को चुनकर भ्रष्टाचार मुक्त हो जाये। ऐसा ही मेरा भारत देश ऐसा हो सपनों का भारत। एक भ्रष्टाचार मुक्त देश होगा।

2047 में मेरे भारत में किसी प्रकार का कोई भेदभाव न हो :- किसी प्रकार का कोई लैंगिक भेदभाव और किसी प्रकार कोई शोषण न हो। कोई दुष्ट प्रकार का जातिगत भेदभाव नहीं हो, मेरे देश मानव धर्म का हर एक व्यक्ति द्वारा पालन हो। मेरे देश की जो संस्कृति पीछे जा रही है उस संस्कृति को समझना होगा। अपनी सभ्यता के बारे में जानना होगा। ऐसा होगा मेरे सपनों का भारत।

2047 में मेरे भारत की हिन्दी को सही मायने में सम्मान मिलेगा :- हमारे देश में सबसे ज्यादा बोलने वाली भाषा हिन्दी है। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्र भाषा है। आज के समय में जहाँ हिन्दी विलुप्त हो रही है आज के समय में हर एक व्यक्ति अंग्रेजी को ओर आकर्षित हो रहा है। इसलिए जो हमारी मातृभाषा को सही मायने में वे अधिकार व सम्मान मिलेगा।

अंजलि चौबे
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (बॉयो)

कोरोना

प्रस्तावना :- (WHO) ने कोरोना को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना बहुत ही सूक्ष्म और प्रभावी वायरस है। ये बीमारी चीन के Wuhan शहर से उत्पन्न है।

कोरोना बीमारी का लक्षण :- इस बीमारी में पहले बुखार होता है, सूखी खाँसी होती है। इस बीमारी से किडनी फेल होना या फिर जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी हो तो उन लोगों को ज्यादा समस्या होती है।

कोरोना से बचाव के लिए:- हमें अपने हाथों को समय-समय पर धोना चाहिए और खाँसते और छींकते समय नाक और मुँह पर रूमाल रख लेना चाहिए। Most Important मांस या मछली और अंडे के सेवन से बचें और फल या सब्जी को धोकर खाना चाहिए। मास्क को तभी प्रयोग कीजिए जब आप किसी भी व्यक्ति के सम्पर्क में हों।

कोरोना से हुए नुकसान :- बहुत सारे नुकसान हुए किसी-किसी का तो परिवार ही उजड़ गया है। कुछ बच्चे अनाथ हो गये, किसी की माँ का साया हट गया तो किसी के पिता का, किसी के बच्चे का। हे भगवान इसांन बनाये तो गरीब नहीं बनाना। बहुत दुख है जिन्दगी में। शायद जीवन जीना चाहते थे लोग पर शायद खुदा को भी मंजूर नहीं था।

पहला लॉकडाउन :- जब पहला लॉकडाउन 24 मार्च को 21 दिन का लगाया गया तो हर घर में अंधेरा सा छा गया। जरा सोचिए उन घर में जो आज कुछ काम करके लाते होंगे तो तब वे कल का भोजन खाते होंगे।

कुछ सांस जैसे रूक गयी है
ऐसा कोरोना काल था किसी का अपना
गया किसी का सपना गया।

अंजलि चौबे
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष (बॉयो)

अनमोल वचन

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा सौन्दर्य और यौवन को परास्त कर देती है।

-चाणक्य

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की, उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

-एल्वर्ट आइंसटीन

हमेशा ध्यान रखिए कि आपका सफल होने का संकल्प किसी भी और संकल्प से महत्वपूर्ण है।

-अब्राहम लिंकन

जो मन को नियंत्रित नहीं करते उनके लिए वह शत्रु के समान कार्य करता है।

-श्रीमद्भगवतगीता

क्रोध से भ्रम पैदा होता हो, भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती हो, जब बुद्धि व्यग्र होती है। तब तर्क नष्ट हो जाता है जब तर्क नष्ट होता है। तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।

-श्रीमद्भगवतगीता

अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे तो इसका कुछ मूल्य हो, अन्यथा यह सिर्फ बुराई का एक ढेर है और इससे जितना जल्दी छुटकारा मिल जाए उतना बेहतर है।

-स्वामी विवेकानन्द

-वैशाली
एम0ए0, II-Sem. (हिन्दी)

विश्व युद्ध का खतरा और हम

प्रस्तावना:–युद्ध से आशय ऐसी समस्या से है, जिसमें एक देश दूसरे देश पर आक्रमण करके उस पर कब्जा करने की कोशिश करता है, युद्ध कहा जाता है। ''युद्ध एक ऐसी भयावह स्थिति होती है, जान–माल की हानि होती है, युद्ध का खतरा बना रहता है, किन्तु यह विदित होने के बावजूद अधिकांशत: देशों में युद्ध की स्थिति देखने को मिलती है।''

युद्ध के प्रमुख कारण:–अक्सर यह देखा जाता है कि युद्ध का कोई न कोई कारण अवश्य पाया जाता है, युद्ध के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

1. दूसरे देश की भूमि पर कब्जा करने की इच्छा।
2. दूसरे देश पर वर्चस्व स्थापित करने की इच्छा।
3. स्वयं को ताकतवर दिखाने की इच्छा।
4. विश्व में स्वयं को शक्तिशाली प्रदर्शित करने की इच्छा।
5. अपनी शक्ति तथा परमाणु शस्त्रों का प्रदर्शन करने की इच्छा।

विश्व युद्ध से आशय:– विश्वयुद्ध से आशय उस युद्ध से होता है, जिसमें कई देश प्रतिभाग करते हैं, हमारा विश्व दो भागों में बँटा हुआ है, (1) उत्तरी गोलार्द्ध (2) दक्षिणी गोलार्द्ध। प्राय: देखा जाता है कि युद्ध अक्सर दो देशों मध्य से प्रारम्भ होता है फिर इसमें कई देश सम्मिलित हो जाते हैं, तब विश्वयुद्ध की स्थिति उत्पन्न होती है। विश्वयुद्ध की स्थिति में विभिन्न देशों की आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा का खतरा बना रहता है तथा युद्ध के पश्चात् सम्मिलित देशों पर युद्ध के दुष्परिणाम सामने आते हैं।

विश्व युद्ध की स्थिति:– विश्व में अभी तक दो बार विश्वयुद्ध की स्थिति उत्पन्न हुई है, प्रथम विश्वयुद्ध सन् 1914–1918 तक लड़ा गया, जिसमें लाखों व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा जान–माल की अत्यन्त हानि हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध सन् 1939 से 1944 के मध्य लड़ा गया, जिसमें भयंकर दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा था। द्वितीय विश्वयुद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे ताकतवर देश के द्वारा जापान जैसे धुरी राष्ट्र पर परमाणु हमला किया गया था, जिस हमले में जापान के दो बड़े शहरों **हिरोशिमा तथा नागासाकी** पर परमाणु हमले हुए। ये दोनों शहर पूर्णत: नष्ट हो गये थे, जिसके दुष्परिणाम अभी भी देखने को मिलते हैं। आज भी वहाँ पैदा होने वाले बच्चों में शारीरिक अपंगता तथा मानसिक अपंगता देखने को मिलती है तथा उनमें अन्य बीमारियाँ भी देखनें को मिलती हैं।

विश्व युद्ध का खतरा और हम:– विश्वयुद्ध जैसी भीषण स्थिति में भयंकर समस्याओं का सामना करना पड़ता है, वर्तमान समय में रूस और यूक्रेन के मध्य हो रहे युद्ध का तृतीय विश्वयुद्ध की आहट के तौर पर देखा जा रहा है, भले ही यह युद्ध दो राष्ट्रों के मध्य हो रहा है, किन्तु इसके दुष्परिणाम सभी राष्ट्रों को भुगतने पड़ रहे हैं।

इस युद्ध को प्रारम्भ हुए एक माह होने को जा रहा है, आज इस युद्ध का 28वॉ दिन है, किन्तु इस महायुद्ध की परिस्थिति में परिवर्तन देखने को नहीं मिल रहा है, यह युद्ध मात्र दो देशों के मध्य ही नहीं है, अपितु दो नेताओं की तानाशाही के मध्य युद्ध के रूप में देखा जा रहा है। यूक्रेन के द्वारा नाटो जैसे संगठन में शामिल न होने के कारण यह रूस के द्वारा उसके प्रति अड़ियल रूख अपनाने

के कारण दिखाई देता है। किन्तु यह स्थिति अगर आगामी कुछ समय तक इसी प्रकार बनी रही तो इसमें दोनों राष्ट्रों को अत्यधिक हानि होगी। अत: यह महायुद्ध शीघ्र अति शीघ्र रोकना जरूरी है अत: संयुक्त राष्ट्र संगठन तथा अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद जैसे शक्तिशाली संगठनों को भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

विश्व युद्ध से होने वाली हानि:- विश्वयुद्ध से भयंकर नुकसान होता है, भीषण परमाणु हमलों के कारण इसके दुष्परिणाम सामने आते हैं, विश्वयुद्ध से निम्नलिखित हानि होती है।

(1) आर्थिक हानि:- विश्वयुद्ध से आर्थिक रूप से भयंकर नुकसान का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण युद्ध में सम्मिलित देशों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ता है तथा जिसके कारण इन देशों की आर्थिक स्थिति कमजोर तथा आर्थिक व्यवस्था चरमरा जाती है, जिसके कारण विभिन्न आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

(2) सामाजिक हानि:- युद्ध का प्रारम्भ तो उत्साह तथा जोश के साथ होता है, इससे सामाजिक हानि उठानी पड़ती है, जिसके कारण विभिन्न देशों में सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण व्यक्तियों के जीवन स्तर में कमी सामाजिक स्तर में कमी देखने को मिलती है।

(3) राष्ट्रीय हानि:-विश्वयुद्ध में राष्ट्रीय हानि देखने को मिलती है, जिसमें राष्ट्रीय हितों की भारी हानि होती है, सभी देशों की आर्थिक दशा कमजोर हो जाती है, जिससे अनेक समस्याएँ देखने को मिलती हैं। अत: इससे राष्ट्रीय हितों की हानि से बचने हेतु युद्धों की स्थिति से दूर रहना चाहिए। जिससे सभी देशों का भविष्य सुरक्षित हो सके।

(4) मानसिक हानि:- विश्वयुद्ध में इससे पीड़ित देशों को तथा नागरिकों को मानसिक रूप से समस्याओं का सामना इनको करना पड़ता है। जिसके कारण चिन्ता, तनाव, कुंठा जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण मानसिक समस्याएँ देखने को मिलती हैं। यह युद्ध भले ही समाप्त हो जाये किन्तु इन युद्धों की दुष्स्मृतियाँ मन-मस्तिष्क से लम्बे समय तक दूर नहीं होती हैं, इनके कारण तनाव जैसी समस्याएँ सामने आती हैं।

(5) परमाणु तथा आणविक हानि:- युद्ध में एक देश दूसरे देश पर परमाणु हमले करता है, जिससे कि दूसरे देश पर कब्जा कर सके। किन्तु परमाणु तथा आणविक हमलों से भयंकर हानि होती है। इसके कारण आर्थिक क्षति होने के साथ-साथ रक्षा उपकरणों की भी क्षति होती है, अत: परमाणु शस्त्रों से होने वाली क्षति से बचने के लिए युद्धों से बचा जा सकता है।

विश्वयुद्ध से बचने के लिए किये गये उपाय:- विश्वयुद्ध से बचने के लिए विभिन्न उपाय किये जाते हैं। जिससे कि युद्ध जैसी स्थितिसे बचा जा सके, इसके लिए विश्वस्तर पर संयुक्त राष्ट्र तथा आर्थिक तथा सामाजिक परिषद जैसे शक्तिशाली संगठन बनाये गये हैं। इनके द्वारा कई बार इन स्थितियों से बचा जा सका है।

निष्कर्ष:- युद्ध का प्रारम्भ तो जोश और उत्साह के साथ होता है, किन्तु इसकी समाप्ति भयंकर पीड़ा तथा वेदनाओं के साथ होती है, इसके कारण यह देखने को मिलता है, युद्ध को प्रारम्भ होने से पूर्व ही रोक लिया जाये, जिससे मानवीय मूल्यों की क्षति न हो।

याद रखो दुनिया वालो, मानवता की ताकत को रखो।
अपनी रक्षा हेतु के हेतु हथियार पड़े हैं बिकने को।।

रौनक पवार
एम0ए0 प्रथम वर्ष
राजनीति शास्त्र

नदियों की लहरों से

नदियों की लहरों से
समुद्र की गहराइयों,
नयनों की दूरियों से
ओठों की मुस्कान बयाँ
करती है नाम आपका
पेड़ों की डालियों पर
चिड़ियों का रहता है बसेरा
उसी तरह ख्यालों से ख्याल
तक बहार है आपका

नाम- सोनाली उपाध्याय
मो0 9810848580

मेहनत और कामयाबी

मन लगता नहीं था जिसका पढ़ाई में,
आज उसे टेंशन घर वालों की,
और खुद के Career की होने लगी
करी जो फिक्र उसने इन बातों की,
तो उसकी दोस्ती मेहनत से हो गयी,
पढ़कर किताबें और लेकर गुरु से ज्ञान
उसे तो अपनी मंजिल की दिशा मिल गई,
कर मेहनत और चलकर कामयाबी के रास्तों पर,
उसने कठिनाइयों की सीढ़ियाँ छोटी कर दीं,
और जो कह रहे थे तुम शायद ही कर पाओ,
उनकी आँखों के आगे जीत हासिल कर,
उसने उनके मुँह पर चुप्पी साध दी।

अर्पित सिंह
एम0एस0सी0 प्रथम वर्ष (कैमिस्ट्री)

बदलता दौर

इंसान के बुरे विचारों को देखकर मेरा दिल दहल गया है,
आज मुझे लगता है, कि शायद जमाना बदल गया है।
मेरे देश के लोगों में शराफत की झलक थी कभी
पर आज क्यों वो बेशर्म बेहया बन गया है।
कभी-कभी किसी को देखकर यकीं नहीं होता
कि इंसान खुद की नजरों में कहाँ तक गिर गया है।
सच ही सुना था मैंने कि शराफत का जमाना नहीं अब
अय्याश लोगों से आज हर बाजार भर गया है।
मैं ये सोचता हूँ कि इस देश का भविष्य क्या होगा।
अब ये जमाना है तो आने वाला जमाना क्या होगा।
हमने तो देख लिया जमाने को शराफत के हर पैमाने से
यकीं नहीं होता तो पूँछ लो हर हाल इस दीवाने से
बेशर्मी, बेहयाई और बेवफाई के सिवा बचा नहीं कुछ शेष
ये जमाना बहुत खराब है कहते हैं यही 'उमेश'

उमेश कुमार
बी0ए0 द्वितीय वर्ष

नवीकरणीय ऊर्जा: जलवायु परिवर्तन का समाधान

परिभाषा:- नवीकरणीय ऊर्जा ऐसे स्त्रोतों व संसाधनों से प्राप्त की जाती है जो असीमित हैं जैसे सूर्य, जल, पवन, भूताप, हाइड्रोजन व नाभिकीय। नाभिकीय ऊर्जा को स्वच्छ, अक्षय व हरित ऊर्जा भी कहा जाता है। पिछले कुछ दशकों में भूमण्डलीय तापमान व जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों के खुलकर सामने आने से लोगों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूकता बढ़ी है व बढ़ती जनसंख्या के कारण परम्परागत सीमित स्त्रोतों से प्राप्त ऊर्जा काफी नहीं है व इसलिए पर्यावरण व लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए हरित व अक्षय ऊर्जा का विकास भविष्य के लिए बहुत जरूरी है।

नवीकरणीय ऊर्जा की आवश्यकता क्यों ? इसको हम कुछ बिन्दुओं में समझते हैं।

(1) पर्यावरण संरक्षण के लिए:- जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए हरित ऊर्जा को बढ़ावा देना आवश्यक है। हम जानते हैं कि जीवाश्म ईंधन के प्रयोग करने से कार्बन का उत्सर्जन बहुत अधिक मात्रा में होता है जिससे पृथ्वी के तापमान व प्रदूषण में लगातार वृद्धि हो रही है।

(2) आत्मनिर्भर रोजगार को बढ़ावा:- हम जानते हैं कि भारत जैसे देश जिनके पास जीवाश्म ईंधन का भंडार नहीं है उन्हें पेट्रोल, तेल, गैस आदि ऊर्जा संसाधन दूसरे देशों से आयात करने पड़ते हैं व अक्षय ऊर्जा का विकास करके हम अपने देश को आत्मनिर्भर व रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं।

(3) कम व्यय में अधिक उत्पादन :- अक्षय ऊर्जा की निर्माण इकाइयों को लाकर हर देश दूसरे देश में जाने वाले पैसों को अपने देश में रोक सकता है व स्वयं आत्मनिर्भर बन सकता है।

हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए उठाये गये कदम :-

जलवायु परिवर्तन से भविष्य में होने वाले खतरों को रोकने के लिए देश व दुनिया में बहुत बड़े कदम उठाये जा रहे हैं।

(1) ग्लोबल हरित ग्रीड:- भारत में वर्ष 2018 में ब्रिटेन के ग्लास्को मीटिंग में कहा कि सूर्य कभी अस्त नहीं होता व One Sun one Grid का विजन दिया। इस योजना का उद्देश्य पूरी दुनिया को सौर ऊर्जा से एक टेक्नोलॉजी द्वारा जोड़ना व पूरी दुनिया में बिजली पहुँचाना है। जिससे जहाँ सूर्य अस्त है वहाँ सूर्य जिस देश में उगा है वहाँ से सौर ऊर्जा पहुँचाने की योजना है।

(2) हरित हाइड्रोजन व अमोनिया योजना:- भारत सरकार का 2030 तक 5 मिलियन टन हरित H_2 व NH_3 का निर्माण करके फसल खाद में उपयोग करने की योजना है।

(3) जैव ईंधन योजना 2018:- चावल खाद्य से इथेनॉल का प्रयोग चावल व खाद्य पदार्थो से बनी इथेनॉल को जीवाश्म ईंधन में मिलाकर कमी को पूरा करना। इसके लिए भारत का लक्ष्य 2030 तक पेट्रोल में 20% इथेनॉल मिलाना है।

(4) नाभिकीय ऊर्जा का विकास:- भारत का लक्ष्य 2023 तक 63 GW नाभिकीय ऊर्जा का विकास करना है।

(5) दुनिया द्वारा उठाये गये कदम:- माह अक्टूबर में U.K. में हुई Cop 26 मीटिंग में 193 से ज्यादा देशों ने हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कई कसमें खाई इनमें प्रमुख हैं-

(a) इलेक्ट्रिक गाड़ियों को बढ़ावा

(b) EU व USA द्वारा Methone Emission कम करना व 02^0c ताप कम करना।

(c) कोयले पर निर्भरता कम करना।

(d) सभी देशों में आने वाले समय में Net O कार्बन उत्सर्जन की कसम खाई।

(e) भारत द्वारा 2070 तक Net O Co_2 उत्सर्जन का वादा किया गया।

निष्कर्ष :- हरित व नवीकरणीय ऊर्जा एक ऐसा स्त्रोत है जो पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य दोनों के लिए अच्छा है। अत: हम सबको पर्यावरण व मानव जाति के हितों को देखते हुए अपनी निर्भरता जीवाश्म व सीमित ईंधन पर कम करके नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना है।

अनुष्का नागर

बी.ए. तृतीय वर्ष

।। मेरे दिल और मेरे मन की सोच।।

1. चन्द्रगुप्त ने चाणक्य से कहा
कि अगर किस्मत लिखी जा चुकी है
तो कोशिश करने से क्या मिलेगा ?
चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से कहा
हो सकता है कोशिश से ही मिलेगा !

2. जरूरी नहीं की आप मिठाई
खिलाकर के ही लोगों को खुश करें
आप लोगों से मीठा बोलकर
उन्हें खुश कर सकते हैं।

3. एक बार अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा
इस दीवार पर कुछ ऐसा लिखो कि
खुशी में पढ़ूँ तो दु:ख हो
और दु:ख में पढ़ूँ तो खुशी हो
श्रीकृष्ण जी ने बड़े प्यार से लिखा।
यह वक्त गुजर जायेगा !

4. वक्त अच्छा जरूर आता है
मगर वक्त पर ही आता है
कागज अपनी किस्मत से उड़ता है
लेकिन पतंग अपनी काबलियत से
इसलिए वक्त साथ दे न दे
काबलियत जरूर साथ देती है

5. दो अक्षर का होता है लक
ढ़ाई अक्षर का होता है भाग्य
तीन अक्षर का होता है–नसीब
साड़े तीन अक्षर की होती है किस्मत
पर ये चारो के चारो चार अक्षर–मेहनत से छोटे होते हैं।

रवि अहिरवार
बी0ए0 प्रथम वर्ष

आपके हाथों से

शहर में शमा जल रही है आपके हाथों से,
पत्थरों की सतह पिघल रही है आपके हाथों से।

हम भी बातें करने लगे हैं अब इश्किया,
हमारी शख्सियत बदल रही है आपके हाथों से।

कुण्डली में राहु का दोष कुछ कम हुआ है,
सिर की मुसीबत टल रही है आपके हाथों से।

आपका नाम ऊँचा लेकर जाएँगी वे पतंगें,
जिनकी डोरियाँ निकल रही हैं आपके हाथों से।

सुना है वे काँटें भी महकने लगे हैं आजकल,
जिनकी परवरिश चल रही है आपके हाथों से।

आपका साथ पाकर हम हो गये हैं 'काबिल',
हमारी मेहनत फल रही है आपके हाथों से।

नकुल जादौन
बी0ए0 अन्तिम वर्ष

क्रीड़ा परिषद

एम0एम0एच0 कॉलेज, गाजियाबाद

वार्षिक खेलकूद की संक्षिप्त रिपोर्ट सत्र 2021-22

यह महाविद्यालय अपने खिलाड़ियों की अद्‌भुत प्रतिभा के कारण आरम्भ से ही अग्रणी रहा है, इसीलिए महाविद्यालय को अपने खिलाड़ियों पर गर्व है। महाविद्यालय का खेलकूद के क्षेत्र में गौरवशाली इतिहास रहा है। जिसका विशेष कारण यह है कि महाविद्यालय के संस्थापक श्री गुरु पिताजी महाराज का खेलों के प्रति अत्यधिक लगाव था। यह उन्हीं परम सन्त का आशीर्वाद है कि महाविद्यालय का नाम देश-विदेश में विख्यात है। श्री गुरु पिताजी महाराज का स्लोगन था कि खेल ही जीवन है और जीवन ही खेल है। जिसके फलस्वरूप महाविद्यालय ने खेलों में निरन्तर प्रगति की और अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी इस देश को प्रदान किये। उदाहरण के लिए महाविद्यालय के पूर्व छात्र श्री हरवंश लाल सूरी, जिन्होंने 1964 में टोक्यो ओलम्पिक में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करके महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। इसके पश्चात् यह क्रम निरन्तर जारी रहा। श्री रणवीर सिंह, अर्जुन पुरस्कार विजेता, रोबिन सिंह, जूनियर टेस्ट प्लेयर, भारतीय क्रिकेट टीम, इन्द्रेश धीरज, एशियन, क्रासकन्ट्री में कांस्य पदक विजेता और मुम्बई मैराथन दौड़ में पुरस्कार स्वरूप इण्डिका कार प्राप्त की। मुकेश कुमार, जूनियर एशियन में देश का प्रतिनिधित्व, कालूराम लक्ष्मण पुरस्कार विजेता और तेहरान में भारतीय कबड्‌डी टीम का प्रतिनिधित्व, दानवीर सिंह कामन वेल्थ खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय एथलैटिक मीट में 5000 मी0 और 10000 मी0 दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाया तथा सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। इसी प्रकार धर्म सिंह ने 20 किमी0 वॉक में स्वर्ण पदक प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाया। सुमित शर्मा ने विश्व अन्तर्विश्वविद्यालय शतरंज प्रतियोगिता जो मलेशिया में हुई, में प्रतिनिधित्व किया। अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की ऋृचाा सूद ने चक्का फेंक में स्वर्ण पदक, नरेश कुमार ने 20 किमी0 वाक में स्वर्ण पदक प्राप्त कर नया कीर्तिमान बनाया। बबीता चौधरी ने 400 मी0 दौड़ व 400 मी0 बाघा दौड़ में स्वर्ण पदक, मनीषा भाटी ने वुशु महिला में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। संघप्रिय गौतम ने 400 मी0 दौड़ में रजत पदक, विकुल त्यागी ने ऊँची कूद में स्वर्ण पदक, अनीता ने 20 किमी0 रोड रेस में स्वर्ण पदक, पूजा पाल ने कबड्‌डी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक सोनिया शाटपुट में स्वर्ण पदक, संदीप सांगवान ने 20 किमी0 में रजत पदक, संदीप कुमार और सन्नी ने कबड्‌डी प्रतियोगिता में रजत पदक, रंजीत रस्तोगी पावर लि0 में कांस्य पदक, निधि चौधरी ने 100 मी0 व 200 मी0 दौड़ में कांस्य पदक, गौरव त्यागी, अंजीत लोहिया, जगतपाल गौड, अमित आनन्द दुष्यन्त सेठी, रोयल राजपूत, रोबिन चौधरी ने क्रिकेट में स्वर्ण पदक, अनिल कुमार चहल ने लम्बी कूद में रजत पदक, वरुण संभरवाल ने 200 मी0 दौड़ में रजत पदक, बाक्सिंग में अरूण कुमार ने 45 किग्रा0 भार में कांस्य पदक और जूड़ों में यशपाल ने 60 किग्रा0 में कांस्य पदक, बाक्सिंग में अजीत कुमार, प्रवीन कुमार एवं सतपाल ने स्वर्ण पदक तथा नरेन्द्र ने रजत पदक, कु0 अनीता ने 20 किमी0 रोड रेस में स्वर्ण पदक तथा शिवानी ने जूड़ो में कांस्य पदक तथा कबड्‌डी में नीता तिवारी, पूजा पाल, श्रीकान्त तेवतिया, अमित कुमार आर्य, लोकेश कुमार, गीता तेवतिया, चौ0 नेहा ने रजत पदक, हुमाखान ने वुशु में रजत पदक, अमित रोसा ने कांस्य पदक और श्वेता ने बाक्सिंग में कांस्य पदक प्राप्त कर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। अमित कुमार तेवतिया, सौरभ श्रीवास्तव का विज्जी ट्राफी और कम्बाइण्ड यूनिवर्सिटी में भाग लेने के लिए चयन हुआ। उत्तर क्षेत्र अन्तर्विश्वविद्यालय हैण्डबाल प्रतियोगिता में यामीन और हिमांशु कुमार निम ने रजत पदक प्राप्त कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे महाविद्यालय में शीर्षस्थ खिलाड़ी इस समय देश और प्रदेश में राजकीय सेवाओं में उच्च पदों पर आसीन होकर महाविद्यालय को गौरवान्वित कर रहे हैं।

इस वर्ष 2021-22 में चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालय की खो-खो पुरुष व महिला तथा बेसवाल पुरुष व महिला प्रतियोगिताओं का महाविद्यालय में सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। अखिल भारतीय अन्तर्विश्वविद्यालय वुशु महिला

प्रतियोगिता में महाविद्यालय की गिन्नी भाटी ने एक स्वर्ण पदक और दो रजत पदक, पोषिका शर्मा ने शूटिंग में रजत पदक तथा जूडो महिला प्रतियोगिता में पूजा यादव ने कांस्य पदक प्राप्त कर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया।

चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालय की विभिन्न प्रतियोगिताओं में इस वर्ष 2021-22 में महाविद्यालय की खो-खो पुरुष, जूडो महिला, बास्केटवॉल महिला और शतरंज टीमों को विजेता का स्थान प्राप्त हुआ। महाविद्यालय के सहर्ष मोहन को बैडमिंटन पुरुष में एकल विजेता तथा करिश्मा नेगी को बैडमिंटन महिला में एकल उपविजेता का स्थान प्राप्त हुआ। महाविद्यालय की पूजा यादव, मानविका गौतम, अनु सैनी को जूडो, शिवा त्यागी, भावना सिंह को ताइक्वांडो, रवि यादव, अंकित यादव को कुश्ती और पोषिका शर्मा को शूटिंग प्रतियोगिता में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक, शिखा को जूडो, शिवा त्यागी, खुशी, दिव्या पाल को ताइक्वांडो, निपुन रूहेला को टेबिल-टेनिस, शिवम सिंह, आशुतोष पाल, मानविका गौतम को कुश्ती में व्यक्तिगत रजत पदक तथा रिया चौहान को ताइक्वांडो, मुकुल यादव, रोशन विष्ट, संस्कार चौहारी एवं श्रुति को कुश्ती में व्यक्तिगत कांस्य पदक प्राप्त हुआ। महाविद्यालय के निम्नांकित छात्र/छात्राओं का चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय की विभिन्न टीमों में चयन हुआ, जिन्होंने अन्तर्विश्वविद्यालय की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करके महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय को गौरवान्वित किया। इनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-

1. कुश्ती- रवि यादव, अंकित यादव।
2. खो-खो- अरुण कुमार, सचिन कुमार, राहुल कुमार गुप्ता, गगन कुमार पाल, धीरज कुमार कामत, संदीप यादव, मुस्कान खान, तनु तेवतिया।
3. वेसबाल- सागर सोलंकी, अभिनव, गगन यादव, राजा, अंकित कुमार, रवि कुमार गुप्ता, तरुण चौधरी, रंजना गुप्ता, आकांक्षा चौधरी, निशा सिंह, दुर्गेश श्विानी।
4. योग- आकाश शर्मा, दिनेश, ज्योति, मुस्कान।
5. क्रिकेट - रिया रावत।
6. ताइक्वांडो- शिवा त्यागी, भावना सिंह।
7. टेबिल-टेनिस- निपुन रूहेला।
8. वुशु- गिन्नी भाटी।
9. बास्केट बॉल-अपर्णा चौहान, प्रियंका रावत।
10. जूडो- पूजा यादव।
11. हॉकी- माइकल चौधरी।
12. पावर लिफ्टिंग- आकाश।
13. सॉफ्ट बॉल- निशा सिंह, कलश राजपूत, आकांक्षा चौधरी, अंजलि, जितेन्द्र पाल, शिवम, तरुण कुमार, अभिषेक सिंह, शेखर।
14. बैडमिंटन- सहर्स मोहन, निपुन त्यागी, करिश्मा नेगी।
15. लॉन टेनिस - कुशल तंवर।
16. वॉली बॉल - हिमांशु कुमार सिंह।
17. शतरंज- नरायण गाहा।
18. नेटबॉल- अपर्णा चौहान, प्रियंका रावत, खुशी गोयल, भारती सिंह, भारती शर्मा, भावना सिंह, प्रेरणा चौधरी।

अन्त में मैं आप सबका आभारी हूँ। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 (डॉ0) पीयूष चौहान का, जिनसे हमको कार्य करने की दिशा मिलती है।

मैं आभारी हूँ अपने सभी शिक्षकों का गैर शिक्षक साथियों का, जिनके सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता था।

(डॉ0 डी0आर0 यादव)
क्रीडा सचिव

एम0एम0एच0 कॉलेज, गाजियाबाद

स्वीप संयोजक : **डॉ0 दीप्ति रानी**

स्वीप टीम के सदस्य: डॉ0 गौम बैनर्जी, श्रीमती आरती सिंह, डॉ0 संजीत प्रताप सिंह, डॉ0 पूनम गुप्ता, डॉ0 मूलचन्द्र वर्मा, श्री रविन्द्र कुमार।

एम0एम0एच0 कॉलेज गाजियाबाद की स्वीप टीम द्वारा निर्वाचन आयोग के स्वीप कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित गतिविधियों की जानकारी निम्न प्रकार है-

1. स्वीप योजना के अन्तर्गत मतदाता जागरूकता हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना की 4 इकाइयों के स्वयंसेवकों द्वारा कोविड अनुरूप व्यवहार अपनाते हुए रैली निकाली। गाजियाबाद के कई मार्केट में लोगों को जागरूक करने के लिए पर्चे बाँटे।
2. कॉलेज में मतदाता जागरूकता क्लब बनाया गया, वोटर हेल्पडेस्क भी बनाई गई, जिसके तहत दो दिवसीय वोटर आई0डी0 रजिस्ट्रेशन कैम्प आयोजित किया गया। करीब 500 स्वयंसेवकों ने वोटर कार्ड हेतु फार्म भरा।
3. माह जनवरी से मार्च 2022 के दौरान लगातार कई स्वयंसेवकों ने स्वनिर्मित/डिजिटल पोस्टर और गीत द्वारा लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया।
4. महाविद्यालय में मतदाता जागरूकता विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता, गीत प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता और कविता प्रतियोगिता आयोजित कराई गई।
5. सोशल मीडिया पर स्वयंसेवकों की वीडियो अपील के माध्यम से युवा मतदाताओं को प्रेरित किया गया।
6. एन0एस0एस0 स्वयंसेवकों ने मतदाता जागरूकता के लिए 03 से 10 फरवरी तक सोशल मीडिया अभियान में भाग लिया। कैफ खान, आकाश चौधरी, अंजलि चौबे, दिवाकर वशिष्ठ, तान्यता निकिता, रूपम वर्मा, आदर्श शर्मा, सुनैना, ज्योति यादव, साक्षी सिंह, जैसे कई स्वयंसेवकों ने अपने स्व-निर्मित/डिजिटल पोस्टर तथा वीडियो अपील सोशल मीडिया पर पोस्ट किये, जिससे आमजन को 10 फरवरी को वोट डालने के लिए जागरूक करने का प्रयास किया गया। इस्तेमाल किये गये प्लेटफार्म फेसबुक,, व्हाट्सएप स्टेट्स, इंस्टाग्राम पोस्ट/रील, ट्यूटर इत्यादि थे और इस अभियान की अनुमानित पहुँच लगभग 50000 रही।
7. वोट डालने के बाद की सेल्फी के लिए भी प्रतियोगिता हुई, जिसमें रूपम वर्मा, सबा और आदर्श शर्मा की सेल्फी सर्वश्रेष्ठ रही।
8. स्वयंसेवकों ने वोट डालने हेतु एस0एम0एस0/व्हाट्सएप द्वारा भी अपने परिचितों को संदेश भेजे जिसकी संख्या करीब 27000 रही।
9. करीब 300 स्वयंसेवकों ने भारत के चुनाव आयोग की KYC/ PWD/ CVIGIL एप डाउनलोड की और दोस्तों से करवाई।
10. मतदाता जागरूकता हेतु स्वयंसेवकों द्वारा नुक्कड़ नाटक किया गया।

मैं थोड़ा जीना चाहती हूँ

मैं तितली बनकर उड़ना चाहती हूँ।
आसमानों को छूना चाहती हूँ।
मैं सहारा बन मम्मी-पापा का,
जिन्दगी बसर करना चाहती हूँ।
मैं थोड़ा जीना चाहती हूँ।
बेटी हूँ भले मैं उनकी,
बेटे से बढ़कर कुछ करना चाहती हूँ।
मैं थोड़ा पढ़ना चाहती हूँ।
जिन्दगी में कुछ बनना चाहती हूँ।
मैं थोड़ा जीना चाहती हूँ।
जो किया उन्होंने मेरे लिये,
वो कर्ज अदा करना चाहती हूँ।
सिर ऊँचा उनका करना चाहती हूँ।
मैं थोड़ा जीना चाहती हूँ।
तारे गिन-गिन जो रात गुजारी,
छत उनकी बनना चाहती हूँ।
तकदीर बनायी है जिन्होंने मेरी,
तकदीर मैं उनकी बनना चाहती हूँ।
माँ तेरे आँचल में लिपट कर,
मैं थोड़ा रोना चाहती हूँ।
पापा के कन्धे पे बैठ,
फिर बचपन जीना चाहती हूँ।
भाई को चिढ़ाना और,
बहन से लड़ना चाहती हूँ।
उनकी खामोशी को मैं,
फिर से पढ़ना चाहती हूँ।
मैं थोड़ा जीना चाहती हूँ।

-स्वाती सिंह
एम0ए0 II-Sem. (हिन्दी)

प्रकृति का प्रतिशोध

प्रभु विश्व रचाया, वर भी दिया, दिया अमृत वरदान
कर दिया मानव तूने अमृत वह विषवान।
लुप्त हुई गंगा तेरी अमृत धार,
हरे-भरे वसुन्धरे तेरे अनुपम श्रृंगार।
कारण इसका केवल है यही इंसान।
कर ना मानव पार स्वार्थ की सीमा सारी,
वरना, थक जायेगी जब यह धरती बेचारी
भू-डोल होगी धरा, कँप जायेगा ये जहाँ
देख धरा की पीड़ा जब रो उठेगा गगन,
कहीं आसुएँ उसकी गिरेंगी बन के अनल
तो कहीं आसुएँ उसकी डुबो देंगी जन-जीवन
अपने ही मद में डूबे जन,
चिर-निद्रा से खोलो नयन,
उठो-जागो देखो प्रकृति भी ललकारी है।
करने विनाशलीला निकट आ पहुँची है।
इस नभ-धरा के बीच
धन-धान्य से ही प्रीत
अकेली ये प्रकृति
गाती है शोक गीत।
सुन गीत प्रकृति का
पिघला हृदय पर्वत का
दया प्रेम करूणा से
द्रवित हुआ गिरिराज
कुपित-सुजल नयन से
वह जल अभिशाप
ये अभिशाप बना मानव-शोक संताप
कहीं भी नहीं अंत है,
प्रकृति की प्रतिशोध का
यत्र-तत्र सर्वत्र धधकेगी
ज्वाला उसकी रोष का
बुना जाल विज्ञ की ऐसी
विश्व बन बैठा विज्ञ की दासी।
सुख समृद्धि ही विज्ञ की ऐसी
तोड़ दिया बन्धन मानव-प्रकृति की।
महा समर मनु-ईश कृत में
अन्ततः विजय होगी प्रकृति की।
एक पल भी न कर देरी
लिप्सा में डूबे ओ जग प्राणी।

खुशबू वर्मा
बी0एस0सी0 प्रथम वर्ष

गीत भजन गंगा

बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये,
बिन मर्जी पतवार के इसको तू ही पार लगाए।

दूर दूर नहीं दिखे किनारा लहरें भी बिसराये,
बादल भी हैं गरज रहे और मुझको रहे डराए,
जब के मैं सोच रहा तू अब आये तब आये,
बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये।

दुनिया है एक रंगमंच तू इसका निर्देशक,
तू ही बनाये तू ही मिटाये तू ही इसका विषयक,
फिर क्यों ये तेरे हाथ के पुतले मुझको आंख दिखाए,
बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये।

तुझको ही मैं समझू अपना बाकी सब हैं पराये,
तेरे हाथों सब कुछ सम्भव तू ही लाज बचाये,
कर दे एक इशारा नैया पार मेरी हो जाये,
बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये।

तीन बाण तरकश में तेरे चले तो ना एक पाए,
बेहड़े तुम पतों की तरह फिर कोई भी न बच पाए,
बेहदे तुम निर्मल की बिपदा पास मेरे जो आये,
बाबा ये नैया कैसे डगमग डोली जाये।

-ईशा कौशिक
बी0ए0 Ist year

परिवार

परिवार से बड़ा कोई धन नहीं,
पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं।
माँ की छाँव से बड़ी कोई दुनिया नहीं,
भाई से अच्छा कोई भागीदार नहीं।
बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं,
इसलिए 'परिवार से बड़ा कोई जीवन नहीं।

परिवार में कायदा नहीं परन्तु व्यवस्था होती है,
परिवार में 'सूचना' नहीं परन्तु समझ होती है।
परिवार में 'कानून' नहीं परन्तु अनुशासन होता है।
परिवार में 'भय' नहीं परन्तु भरोसा होता है।
और ऐसा परिवार ही हमारा
सुखमयी परिवार होता है।
धरती को पानी की जरूरत होती है,
परिवार को घर की जरूरत होती है।
और घर को परिवार की जरूरत होती है,
और परिवार उन लोगों से बनता है जहाँ प्रेम हो।

-अमीषा
एम0ए0, II-Sem. (हिन्दी)

विश्व युद्ध खतरा और हम

प्रस्तावना–विश्व युद्ध का खतरा और हम। अर्थात् विश्व युद्ध का खतरा वर्तमान में हम पर अर्थात् भारत पर कैसा प्रभाव पड़ेगा। विश्व युद्ध दो देशों के बीच चल रही लड़ाई या लड़ाई शुरू होने से है और हमें क्या करना चाहिए ये प्रश्न बहुत जटिल है। क्योंकि एक चूक, एक गलती हमें गर्त में ढकेल देगी। मगर इस प्रश्न का उत्तर या समाधान हम ही है, चाहे तो हम इस खतरे को टाल सकते हैं। चाहे इस खतरे को हम अपने सिर पर ले ले। लेकिन युद्ध के उपरान्त हम कहाँ होंगे ? क्या हम इस स्थिति में इस खतरे को अपने सिर पर ले ले ? अगर हम इस युद्ध में जो भी निर्णय लेते हैं। क्या परिणाम होंगे ?

विषय वस्तु –विश्व युद्ध का खतरा और हम। वर्तमान में विश्वयुद्ध ये प्रश्न बहुत ही चिन्ता का विषय है। विश्व युद्ध के बाद हम पर अर्थात् भारत पर उसके कैसे परिणाम होंगे ? वर्तमान में देखा जाये तो प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक देश आगे आने की होड़ में लगा है, शक्ति प्रदर्शन में लगा है। मगर विश्व युद्ध एक ऐसी आग है जब तक बुझती है तब तक कई मासूमों, कई घरों और कई देशों को जलाकर ही दम लेगी। विश्व युद्ध के बाद इसके परिणाम कैसे होंगे ? भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? भारत अर्थात् हमारी अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? युद्ध के बाद हम सबका जीवन कैसा होगा ?

विश्व युद्ध के वर्तमान में कारण व परिणाम–प्रथम विश्व युद्ध और दूसरे विश्व युद्ध के बाद वर्तमान में तृतीय विश्व युद्ध की शुरूआत हो चकी है। रूस और यूक्रेन युद्ध ! रूस से अलग होने के बाद यूक्रेन नाटो में सम्मिलित होना चाहता है, यूक्रेन नाटो की सदस्यता लेना चाहता है। मगर रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया, उनके सामने शर्त रखी। मगर यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेस्की उनकी कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं। अगर यूक्रेन नाटो में सम्मिलित होता है तो रूस की सबसे बड़ी चिन्ता का विषय है। पश्चिमी देश उनकी सीमा के भीतर आ जायेंगे जिससे रूस की शान्ति, सुरक्षा भंग होने का खतरा है। वर्तमान में विश्व युद्ध उत्पन्न होने का सबसे प्रमुख कारण रूस–यूक्रेन युद्ध है। किसी भी देश को किसी भी संघ में सम्मिलित होने का अधिकार है मगर इससे किसी अन्य राष्ट्र व देश की शान्ति व सुरक्षा में हस्तक्षेप न हो।

मगर हम इस युद्ध में अपनी भूमिका शान्त रहकर निभायें तो शायद ये विश्व युद्ध शुरू ही न हो और खतरा टल जायेगा। जिसका परिणाम होगा फिर से शान्ति। सभी देशों के माथे पर से चिन्ता की लकीरें समाप्त हो जायेंगी। क्योंकि भारत हमेशा से शान्तिप्रिय देश रहा। जब भारत अंग्रेजों के द्वारा गुलाम बनाया गया तब भी बिना हिंसा के और शान्ति से भारत को आजाद कराया। आज वर्तमान में सभी देशों की नजरें हम पर हैं। यूक्रेन हमसे अर्थात् भारत से कई गुहार लगा चुका है युद्ध को रोका जाए। वहीं रूस वह देश जिससे हमारे रिश्ते और प्रबल हो चुके हैं। रूस ने ही बंग्लादेश के भारत से अलग होने के बाद जब पाकिस्तान बंग्लादेश पर हमला किया तब भारत बंग्लादेश की मदद के कलिए पहुँचा तब यूक्रेन ने हमारे खिलाफ निषेधात्मक बीटो प्रयोग किया जोकि हमारे विपक्ष में था। तब रूस ने सहायता की। और उसी की वजह से आज हम वह युद्ध जीत पाये। तो ऐसी स्थिति में भारत फिर भी अपने स्तर पर प्रयास कर रहा है कि युद्ध न हो। युद्ध से बहुत ही कम सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं, हमेशा हानि हुई है। अगर हम अर्थात् भारत इस युद्ध में किसी का भी साथ देता है तो भारत की स्थिति भी हिरोशिमा और नागासाकी जैसी हो सकती है। जोकि बहुत ही भयामय होगी।

युद्ध का दुष्परिणाम हमारी अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक रहेगा। अभी भी हम अर्थव्यवस्था में सही रूप से विकसित नहीं है। हमारे देश में बेरोजगारी है। वर्तमान में फिर से पचासों साल पीछे चले जायेंगे अगर यह तीसरा विश्व युद्ध होता है।

युद्ध के बाद हमारा जीवन और साथ में विश्व का जीवन अत्यन्त संघर्षपूर्ण होगा। विश्व युद्ध शुरू करने से पहले हमें उसके बाद का भविष्य जान लेना चाहिए। लेकिन वर्तमान में विश्व युद्ध का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। लेकिन इस विश्व युद्ध को रोकने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए अर्थात् पूरे विश्व को। पूरे विश्व में शान्ति बनी रहे इसके लिए हमें युद्ध करना पड़े बल्कि उससे पहले ही हम शान्ति स्थापित क्यों नहीं कर लेते ?

वर्तमान में पूरा विश्व कोरोना महामारी से भी जूझता रहा। क्या पूरा विश्व इस स्थिति में है कि युद्ध हो तो उत्तर है नहीं। हमें अपने–अपने देश का भविष्य सुन्दर और अच्छा बनाना है तो इस युद्ध का रूकना ही सही है। वरना इसके मुझे दुष्परिणाम ही दिखाई दे रहे हैं।

निष्कर्ष–अगर युद्ध की चिंगारी भड़की तो हर जगह होगी आग। हंसती, खेलती, विनाश करती आग। निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि हम ही हैं जो चाहे तो युद्ध करवा सकते हैं और युद्ध जैसे खतरे को टाल सकते हैं। भारत हमेशा से वसुधैव कुटुम्बकम, अहिंसा परमो धर्म: मानने वाला देश है। और युद्ध की विभीषिका में कोई भी देश न जले। हर तरफ सम्मान हो, शान्ति हो।

–मृदुल कुमार
एलएलबी, III-Sem.

देश का युवा

युवा वर्ग देश का भविष्य होने के साथ-साथ हमारे देश के विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत में युवाओं की संख्या अन्य देशों से अधिक है। भारत की लगभग 65 प्रतिशत आबादी की आयु 35 वर्ष से कम है। हर देश का भविष्य उसके युवा वर्ग से होता है। लेकिन चिंता का विषय यह है कि कुछ राजनीतिक नेता हमारे देश के युवाओं को धर्म और जाति के नाम पर लड़ाना चाहते हैं। हाल ही में हुआ कर्नाटक के विद्यार्थियों का हिस्सा जिसमें हमारे देश के युवा आपस में ही लड़ रहे हैं। हमारा आज का युवा अपने भविष्य और देश का भविष्य के बारे में ना सोचकर, स्कूल या कॉलेज में क्या पहने ये सोचते हैं। हमारे देश में स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हमारे युवाओं का कर्तव्य अपनी जिम्मेदारी पूरी करनी है अर्थात् वास्तविक, ईमानदार और अच्छे नैतिक मूल्यों को बनाए रखना।

इसलिए मेरी यही सलाह है कि अपनी युवा क्षमता को बर्बाद नहीं करेंगे। और अंत में, मैं बस यही कहना चाहता हूँ कि हर गुजरता दिन आपके लिए बेहतर हो और जीवन में किसी भी तरह की बाधाओं से आप निराश न हो-उन बाधाओं का साहस के साथ और समझदारी से सामना करें।

-रोहन कुमार
बी0ए0 Ist year

26 जनवरी (गणतंत्र दिवस)

भारत की आन बान शान,
है हमारा गणतंत्र महान।

तिरंगे का करें सम्मान,
भारत माँ को करे प्रणाम।

सबके अधिकारों का रक्षक अपना यह गणतंत्र है,
लोकतंत्र ही मंत्र हमारा हमको इस पर गर्व है।

गांधी नेहरू पटेल ने यह देश आजाद कराया था,
भगत सिंह ने फांसी पर चढ़कर इस देश का मान बढ़ाया था।

यह वतन हमारी शान है
इस वतन पर मर मिटने वालों को हमारा प्रणाम है।
जय हिंद

-आयुष गोयल
बी0ए0 Ist year

पढ़ाई और जंग

पढ़ने वाले बच्चे को
कभी ताने मत मारना।

ना उसकी बेवजह परीक्षा लेना
बेमतलब के सवाल पूछकर।

क्योंकि
केवल किताब खोल लेना
या केवल कलम उठा लेना
पढ़ना नहीं होता।

एक सामान्य बच्चे के लिए
किसी भी जंग से बड़ी
जंग है पढ़ाई करना।

कई डेरे बदलना
कभी इस पेपर की
कभी उस पेपर की
तैयारी में जुटना।

कभी रूममेट
कभी कोचिंग
तो कभी शहर
बदलना।

क्योंकि
केवल किताब खोल देना
या कलम उठा लेना
पढ़ना नहीं होता।

हर पेपर के बाद
कठिन नहीं होता
गुरू, दोस्त या परिजनों
को समझाना
कठिन होता है।

कारणों को सोच-सोच कर
गलतियों को
निकाल-निकाल

दो तीन रात नींद
नहीं आना

एक सामान्य बच्चे के लिए
किसी भी जंग से
बड़ी जंग है पढ़ाई करना।

कभी रिक्शा न कर
पैदल जाना तो
कभी नाश्ता छोड़ कर
पैसे बचाना।

दो जोड़ी कपड़े
और स्पोर्टस शूज
घिसते जाना
कि क्या बोलेगा जमाना।

मकान मालिक, दुकादारों के लफड़े
खाना बनाना, और धोना कपड़े
यानि पूरी एक
गृहस्थी चलाना।

पढ़ने वाले बच्चे को
कभी ताने मत मारना
ना उसकी बेवजह परीक्षा लेना
बेमतलब के सवाल पूछकर।

क्योंकि
केवल किताब खोल देना
या कलम उठा लेना
पढ़ना नहीं होता।

एक सामान्य बच्चे के लिए
किसी भी जंग से
बड़ी जंग है
पढ़ाई करना।

-ललित शाह
बी0ए0 Ist year

माँ

जिसके आँचल की छाया में
बचपन मेरा बीता है
जिसकी उंगली पकड़-पकड़ कर
चलना मैंने सीखा है।

जिसने शिक्षा दी मुझको
हर बुरे काम से बचने की
जिसने दिशा दिखाई मुझको
सही मार्ग पर चलने की।

जिसने मुझे सिखाया है।
हर मुश्किल से टकराना
विपदाएँ कितनी आए।
ना उनसे घबराना।

सारी खुशियाँ दी मुझको
सारे जहाँ से लाकर,
धन्य हुआ मेरा जीवन
ऐसी माँ को पाकर।

शिक्षक

शिक्षक हमारा मान बढ़ाते,
जीने की नई राह दिखाते,
जिन्दगी है, हकीकत में क्या ?
इसको बड़े, प्यार से समझाते।

विद्या का हमें ज्ञान देते,
जिन्दगी को आसान बनाते,
माता-पिता के बाद
हमेशा हमको याद हैं आते।

-काजल
बीएस-सी0 Ist year

मेरे जीवन में मेरे शिक्षकों का महत्व

जीवन में वैसे तो हमेशा ही निरन्तर नये लोगों का मिलना होता रहता है। जीवन पर्यन्त अच्छे–बुरे सभी तरह के मनुष्यों से संपर्क होता है। इसी प्रक्रिया में हम कुछ न कुछ नया सीखते चलते हैं। ऐसे ही कुछ खास मनुष्य हैं जिन्होंने मेरे जीवन में आकर उसे रोशनी से भर दिया है। आज मैं कुछ ऐसे ही खास लोगों के बारे में बताऊँगी जो मेरे परिवार की तरह ही मेरे लिए बहुत खास है। वे हैं मेरे शिक्षक ! जब भी उन लोगों के बारे में बात करती हूँ तो मुझे गर्व महसूस होता है कि ऐसे लोगों से मुझे पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हो सका। सबसे पहले मैं अपने सर जी डॉ0 राकेश कुमार राणा को थैंक्स बोलना चाहूँगी जिन्होंने मुझे ये अवसर दिया है कि मैं कॉलेज पत्रिका में यह सब सांझा कर पा रही हूँ।

जब हम कहीं भी जाते हैं तो सभी लोग हमारे लिए नये होते हैं मेरे लिए भी सब कुछ नया था सबके जीवन की तरह मेरे जीवन में भी नयापन आया मैंने प्रथम वर्ष एम.ए. में समाजशास्त्र में दाखिला लिया। मेरे जीजा जी ने मेरा दाखिला एम.एम.एच. कॉलेज में कराया। मेरे लिए महाविद्यालय में शिक्षक और सहपाठी सब कुछ नया था। आज भी मुझे याद है जब मैं अपनी मेम से कक्षा में मिली, जिनका नाम डॉ0 विमलेश यादव है। थोड़ी सी मन में बेचैनी थी कहीं कुछ गलत न बोल दूँ पर फिर भी मैंने मैडम से बात की। मैडम से बात करने पर मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपनी माँ से ही बात कर रही हूँ। मुझे मैडम से जो अपनत्व की अनुभूति हुई वह अद्वितीय थी। अपनत्व के इसी अहसास ने फिर मैडम से दुबारा मिलने को प्रेरित रखा। प्रेम, अपनत्व और सम्मान की भावना जाग्रत हो उठी फिर मैं डॉ. रेखा शर्मा मैडम से मिली जिनका नम्बर मेरे फोन में पहले 'माय फ्रेंड माय मैम' के नाम से पहले से ही सेब कर रखा था। पर जब मैं मिली तब वास्तव में मुझे ऐसा ही लगा कि मैं अपनी किसी पुरानी दोस्त से ही बातें कर रही हूँ।

अब वे मेरी सबसे अच्छी दोस्त हैं, जब वे समझाती हैं तो मुझे बहुत अपनत्व के साथ बैठाती हैं और समझाती हैं। उनको जानने के बाद ऐसा लगा मानो मेरे जीवन का नजरिया ही बदल गया। विषम परिस्थितियों पर कैसे संयम बनाये रखना है। कहा जाता है कि एक अध्यापक विद्यार्थी के जहाज रूपी भाग्य का कप्तान होता है वह उसे जिस दिशा में चाहे मोड़ सकता है।

हमारे शिक्षक ही अंधकार से भरे इस संसार में हमें रोशनी दिखाते हैं। एक ऐसी उम्मीद जगाते हैं जिनका अनुसरण करके विद्यार्थी अपना जीवन और अपना भविष्य उज्ज्वल बनाते हैं। एक अच्छा अध्यापक इस जटिल संसार में वरदान की तरह मिलता है। ऐसे ही कुछ खास लोग हैं मेरे जीवन में जिन्होंने मुझे अपना प्यार और अपनापन देकर आगे बढ़ने की सीख दी है। जिन्होंने मेरे विचार से परिवर्तन कर कुछ खास ही कर दिया मेरे जीवन को। जिसके कारण मैं भी खुद को खास समझती हूँ जब मैं पहली बार डॉ. सीमा गुप्ता मैम से मिली उन्होंने मेरे नाम को ही सुनहरा कर दिया और उसमें चार चाँद लगा दिये। जब वो मुझे इस प्यारे से नाम से पुकारती हैं तो ऐसा लगता है मेरी माँ मुझे बुला रही हो। कभी ऐसा लगा ही नहीं कि मैं उनको कुछ महीनों से जानती हूँ। बल्कि ऐसा लगता है जन्म से जानती हूँ। ऐसा लगता है कि मैं भी उनकी छोटी बेटी हूँ जब भी मुझे कोई उनके दिये नाम से पुकारता है तो मुझे बहुत ही अच्छा लगता है।

फिर मेरी मुलाकात विभाग में डॉ. मन्दिरा गुप्ता मैम से हुई। कुछ विद्यार्थी उनसे बात करने में काफी डरते थे। पर ऐसा कुछ नहीं था मुझे भी मैम को जानने के बाद लगा कि वे मैम के बारे में ऐसे ही गलत समझ रहे थे। वे तो बहुत प्यारी हैं, मेरी माँ की तरह बातें करती हैं। हम सबको समझाती हैं सभी बच्चों को पढ़ाई में ध्यान देने के लिए कहती हैं। सभी अध्यापकों की तरह कक्षा में आने के लिए बच्चों को प्रेरित करती हैं। वे हमेशा से मेरी सहायता करती रही हैं। मेरी सभी मैडम हमेशा मार्ग में आने वाली मुश्किलों में मेरा साथ देती रही है। मेरी सभी मैडम मेरे जीवन के हर मोड़ पर खड़ी रही है। हमारे कॉलेज की सभी अध्यापिकाएं और अध्यापक बहुत प्यारे और अच्छे हैं। बच्चों को जीवन पथ पर अग्रसर रहने के लिए हमेशा प्रेरित करते हैं।

हम सबके प्रिय सर डॉ. राकेश राणा सर जी हमेशा सबकी मदद करते हैं। वह चाहें विषय उनका हो या कोई अन्य विषय हो, फिर भी उस विषय के बारे में समझाते थे और सबसे खास बात तो यह है कि उन्होंने मुझे अमर ज्योति एम.एम.एच. कॉलेज नाम की पत्रिका में लिखने का मौका दिया। सर ने एक मित्र और पिता की भांति सदैव मेरा मार्गदर्शन किया है। यह मेरा सौभाग्य ही है कि मुझे इतने अच्छे, दयालु और विनम्र स्वभाव वाले शिक्षक मिले। मैं उन सबको नमन करती हूँ। मेरी कोशिश रहेगी कि मैं उनसे मिले ज्ञान का सदैव अनुसरण करती रहूँ और उनकी उम्मीदों पर खरी उतर सकूँ।

–प्रियंका

एम0ए0 III Sem. (समाजशास्त्र)

श्लोक एवं उनके अर्थ

1. **अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।**
   अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतो सुखम्।।

   अर्थ–आलसी को विद्या कहाँ, अनपढ़/मूर्ख को धन कहाँ, निर्धन के मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ।

2. **श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुंडलेन, दानेन पाणिर्न तु कंकणेन।**
   विभाति कायः करुणापराणां, परोपकारैर्न तु चंदनेन।।

   अर्थ–कानों की शोभा कुंडलों से नहीं अपितु ज्ञान की बातें सुनने से होती है। हाथ दान करने से सुशोभित होते हैं न कि कंकणों से। दयालु/सज्जन व्यक्तियों का शरीर चंदन से नहीं बल्कि दूसरों का हित करने से शोभा पाता हैं।

3. **सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।**
   वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वमेव संपदः।।

   अर्थ–अचानक (आवेश में आकर बिना सोचे समझे) कोई कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि विवेकशून्यता सबसे बड़ी विपत्तियों का घर होती है (इसके विपरीत) जो व्यक्ति सोच-समझकर कार्य करता है, गुणों से आकृष्ट होने वाली माँ लक्ष्मी स्वयं ही उसका चुनाव कर लेती है।

4. **कुलस्यार्थे त्यजेदेकम् ग्राम्स्यार्थ कुलंत्यजेत्।**
   ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।।

   अर्थ–कुटुम्ब के लिए स्वयं के स्वार्थ का त्याग करना चाहिए, गाँव के लिए कुटुम्ब का त्याग करना चाहिए, देश के लिए गाँव का त्याग करना चाहिए और आत्मा के लिए समस्त वस्तुओं का त्याग करना चाहिए।

अहंकार

एकदा एकः अहंकारी राजा राजसभायां स्वराज्यस्य सर्वान् पंडितान् आहूय पृष्टवान्-''कः श्रेष्ठः? अहम् ईश्वरः वा?''''किम् कर्त्तव्यं? यदि सत्यं वदेम तर्हि प्राणहानिः तु निश्चिता अस्ति'' इति परस्परं विचारयन्तः भयत्रस्ताः निस्तराः अभवन् राजानं च प्रार्थयन् ''देव! दिनद्वयस्य अवधिः दीयताम्।'' ''तथास्तु'' राजा अवदत्। चिन्ताकुलेषु तेषु एकः ज्ञानवृद्धिः विद्वान् अकथयत् 'अलम् चिन्तया। अहम् उत्तरं दास्यामि।' नियते दिने सर्वे पण्डिताः राज्यसभां प्राप्तवन्तः। अंजलिं बद्ध्वा, दण्डवत् प्रणम्य सः ज्ञानवृद्धः राजानम् अवदत्-'राजन्।' निस्संदेहं भवान् एव श्रेष्ठः न तु ईश्वरः।' 'तत् कथम्?' मदोद्धतः राजा अपृच्छत्।
''भवान् एव श्रेष्ठः यतः भवान् अस्मान् स्वराज्यात् बहिः निष्कासयितुं समर्थ। ईश्वर स्वनिर्मितात् जगतः अस्मान् बहिष्कृत्य कुत्र निवासं दास्यति' पंडितः उदतरत्।

-नत्या शर्मा
बी0कॉम I year

एम.एम.एच. कॉलेज की साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद द्वारा महाविद्यालय के हीरक जयंती वर्ष में सांस्कृतिक सप्ताह 'आशाएँ' का आयोजन

दिनांक 24.03.2022 को महाविद्यालय की स्थापना के हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद के तत्वावधान में सांस्कृतिक सप्ताह 'आशाएँ' का शुभारंभ दीप प्रज्जवल एवं सरस्वती वंदना से हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. पीयूष चौहान ने व्यक्तित्व के विकास में साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को महत्वपूर्ण बताते हुए आशीर्वचन देकर सांस्कृतिक सप्ताह का शुभारंभ किया। अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. केशव कुमार ने समस्त विद्यार्थियों को अधिकाधिक संख्या में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. भीष्म कपूर ने भी विद्यार्थियों को आशीर्वचन दिया।

सांस्कृतिक सप्ताह का उद्घाटन वाद-विवाद प्रतियोगिता के साथ किय गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 'युद्ध अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान है' जैसे ज्वलंत विषय पर किया गया, जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभागिता की तथा विषय की पक्ष और विपक्ष में अपने तर्कों को प्रस्तुत किया। निर्णायक मंडल में डॉ. अपर्णा मल्होत्रा, विधि विभाग एम. एम.एच. कॉलेज, डॉ. रोचना मित्तल, विभागाध्यक्ष राजनीति शास्त्र विभाग, शंभु दयाल डिग्री कॉलेज तथा डॉक्टर रचना प्रसाद, समाजशास्त्र विभाग, वी एम एल जी कॉलेज, गाजियाबाद रहे। कार्यक्रम का संचालन साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद की संयोजिका डॉ. रीना सिंह के द्वारा किया गया तथा डॉ. संजय मिश्रा द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार अमित कुमार एम.ए. प्रथम वर्ष (इतिहास) को, द्वितीय स्थान कु. प्रियंका एम.ए. प्रथम वर्ष तथा सनोवर खान, एम.ए. प्रथम को, तृतीय पुरस्कार आशु शर्मा एम.ए. प्रथम वर्ष द्वारा प्राप्त किया गया। प्रतियोगिता में दो सांत्वना पुरस्कार आकाश सिंह एलएलबी, द्वितीय वर्ष तथा वरुण, बीएससी (बायो) तृतीय वर्ष को प्राप्त हुए।

इस सांस्कृतिक सप्ताह के दूसरे दिन दिनांक 25.02.22 को दो प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्रात: 'विश्व युद्ध का खतरा और हम' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें पचास से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। संयोजिका डॉ. बीना शर्मा के साथ सदस्य डॉ. विनेश, डॉ. सुनीता, डॉ. भारती एवं डॉ. छाया ने सफलतापूर्वक प्रतियोगिता का आयोजन किया। निबंध प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार एम.ए. प्रथम वर्ष राजनीतिशास्त्र की छात्रा कु. रौनक पंवार को मिला। द्वितीय एवं तृतीय स्थान क्रमश: बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा कु. इच्छिता शर्मा तथा एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र ऋतुराज को प्राप्त हुआ, जबकि सांत्वना पुरस्कार एलएल.बी. द्वितीय वर्ष के छात्र मृदुल कुमार को प्राप्त हुआ।

निबंध प्रतियोगिता के पश्चात स्वरचित कविता प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें करीब 40 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की तथा सुंदर भावपूर्ण कविताएँ प्रस्तुत कीं। निर्णायक मण्डल में डॉ. नागेंद्र सिंह, गणित विभाग एम एम एच कॉलेज, डॉ. गीता पाण्डे, हिंदी विभाग, शंभु दयाल डिग्री कॉलेज तथा डॉ. गरिमा सिंह, हिंदी विभाग, वी एम एल जी कॉलेज, गाजियाबाद रहे। कार्यक्रम का संचालन कविता प्रतियोगिता की संयोजिका डॉ. रेखा शर्मा द्वारा किया गया। प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार अमानी मलिक, द्वितीय स्थान नकुल जादौन, तृतीय पुरस्कार कु. यशस्विनी तथा आकाश ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में दो सांत्वना पुरस्कार कु. उन्नति तथा अतिफा खान को प्राप्त हुए।

सांस्कृतिक सप्ताह के तीसरे दिन दिनांक 26.03.22 को दो प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। प्रात: रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें 23 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की। संयोजिका डॉ. मीना वर्मा के साथ सदस्य डॉ. अपर्णा मल्होत्रा, डॉ. सीमा गुप्ता, डॉ. रेनू सिंह राना, डॉ. कामना यादव, डॉ. विपिन वशिष्ठ तथा डॉ. सूर्य प्रकाश द्वारा कुशलतापूर्वक प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

निर्णायक मण्डल में डॉ. वंदना शर्मा, एस.डी. कॉलेज, डॉ. एच.के. राय, चित्रकला तथा डॉ. जलज त्रिपाठी, रसायन शास्त्र विभाग रहे। इस प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार अमानी मलिक और भूपेंद्र को मिला, द्वितीय स्थान पर प्रियंका और प्रीति कुमारी रहे। तृतीय पुरस्कार कु. ऋतु कश्यप को प्राप्त हुआ।

रंगोली प्रतियोगिता के बाद तत्काल भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता का संचालन डॉ. दीप्ति रानी के द्वारा किया

गया। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में डॉ. अनीता प्रकाश, इतिहास विभाग, डॉ. वीरेंद्र यादव, गणित विभाग तथा डॉ. श्वेताभ मित्तल, वाणिज्य विभाग थे। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर वरुण कुमार, बीएससी तृतीय वर्ष रहे। द्वितीय स्थान एम.ए. प्रथम वर्ष अर्थशास्त्र की छात्रा तनु ने तथा तृतीय स्थान भूपेन्द्र और यशस्विनी ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता का सांत्वना पुरस्कार सनोवर खान तथा दुर्गा शर्मा को प्राप्त हुआ।

इसी क्रम में दिनांक 28 मार्च, 2022 को गुणवत्ता सभागार में एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 28 छात्रों ने प्रतिभाग किया तथा भजन, फिल्मी गीत, देश भक्ति गीत और लोक संगीत की समुधुर स्वर लहरी से सबको सराबोर कर दिया।

निर्णायक मण्डल की भूमिका में वी एम एल जी कॉलेज से डॉ. शंपा चौधरी तथा डॉ. उपासना शर्मा एवं एमएमएच कॉलेज से डॉ. अल्पा सिंह रहे। एकल गायन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार बी.कॉम. तृतीय वर्ष की छात्रा इच्छिता को प्राप्त हुआ, जबकि द्वितीय पुरस्कार नाज़िम को मिला। तृतीय स्थान पर निशा और पारस रहे, जबकि सांत्वना पुरस्कार गौरव बिष्ट को प्राप्त हुआ।

डॉ. विमलेश यादव के नेतृत्व में दिनांक 28.03.22 को मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। डॉ. सुता कुमारी, डॉ. सीमा कोहली, डॉ. मंदिरा गुप्ता, डॉ. अंजली दत्त, और डॉ. अनुपमा गौड़ के सहयोग से यह प्रतियोगिता सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में डॉ. राखी द्विवेदी, डॉ. भारती गुप्ता, डॉ. अर्चना सिंह रहे। मेंहदी प्रतियोगिता में कुल पचपन प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रथम पुरस्कार कु. दर्शन कौर को, द्वितीय पुरस्कार कु. प्रियंका श्रीवास्तव और एम.ए. द्वितीय वर्ष अर्थशास्त्र के छात्र विशाल चौधरी को तथा तृतीय पुरस्कार कु. मोनिका कोरी और कु. मंतशा को दिया गया। इस प्रतियोगिता में पाँच सांत्वना पुरस्कार दिए गए जो अंशुपाल, साक्षी सिंह, नेहा पाल, मनीष कुमार और शिवानी को मिले।

दिनांक 29 मार्च, 2022 को प्रात: 'युद्ध की विभीषिका और विश्व शांति' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। पोस्टर प्रतियोगिता का संयोजन डॉ. एच.के. राय तथा उनकी टीम के सदस्य डॉ. मूलचंद, डॉ. अर्चना सिंह तथा डॉ. अनुराधा सिंह द्वारा किया गया। निर्णायक मंडल में वी एम एल जी कॉलेज से डॉ. शशि मलिक, एम एम एच कॉलेज से डॉ. मीनाक्षी सक्सेना तथा डॉ. सूर्यप्रकाश रहे। पोस्टर प्रतियोगिता में कुल सैंतीस छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु. अमानी मलिक, बी.ए. तृतीय वर्ष को, द्वितीय स्थान कोमल गौतम, बी.ए. द्वितीय वर्ष ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान दो विद्यार्थियों भूपेंद्र, बी.ए. द्वितीय तथा कार्तिक ढाका, बीएस.सी. द्वितीय वर्ष ने प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता के दो सांत्वना पुरस्कार बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा हेमलता तथा ज्योति यादव, बीएस.सी. तृतीय वर्ष को दिए गए।

इसी दिन क्विज़ प्रतियोगिता का भी आयोजन गुणवत्ता सभागार में किया गया। प्रतियोगिता के संयोजक डॉ. अनिल गोविंदन, डॉ. जमुना प्रसाद डॉ. रविंद्र कुमार पटेल रहे।

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर फैज़ल अहमद तथा तराना, एलएलबी तृतीय वर्ष, द्वितीय स्थान पर जीतेश, एमएससी फिजिक्स व जतिंदर चौधरी, बीएस.सी. तृतीय वर्ष रहे। क्विज़ प्रतियोगिता का तीसरा स्थान सनोवर खान, एम.ए. समाजशास्त्र और भारती बी.ए. द्वितीय वर्ष ने प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता का सांत्वना पुरस्कार .....

साहित्यिक सांस्कृतिक सप्ताह 'आशाएँ' के अंतिम दिन नाटक प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इसमें सामाजिक, राष्ट्रीय विषयों पर अनेक नाटकों के मंचन ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सनोवर खान की टीम द्वारा मंचित नाटक 'वतन के लिए' को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। दूसरे स्थान पर नाटक 'समाज का सच' रहा, तृतीय स्थान 'सच' नाटक को प्राप्त हुआ। सांत्वना पुरस्कार सोलो नाटक 'एसिड अटैक' को दिया गया। कार्यक्रम के निर्णायक मण्डल में वी एम एल जी कॉलेज से डॉ. उमा जोशी एवं डॉ. अंजलि सिंह तथा एम.एम. एच. कॉलेज से डॉ. सुनीता सिंह एवं डॉ. गौतम बनर्जी रहे। इस प्रतियोगिता का संचालन डॉ. परितोष मणि द्वारा किया गया।

एम.एम. एच. कॉलेज की साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद द्वारा महाविद्यालय के हीरक जयंती वर्ष-2022 में आयोजित सांस्कृतिक सप्ताह 'आशाएँ' का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 08.04.2022 को गुणवत्ता सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मेरठ कॉलेज, मेरठ के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) एस.एन. शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में तथा प्रो. (डॉ.) यू.पी. सिंह, प्राचार्य एल आर कॉलेज,

साहिबाबाद तथा वी एम एल जी कॉलेज, गाजियाबाद की प्राचार्या डॉ. इन्द्राणी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। सांस्कृतिक सप्ताह 'आशाएँ' के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की विजेता प्रस्तुतियों को कार्यक्रम में पुनः प्रस्तुत एवं मंचित किया गया। छात्र-छात्राओं ने एक से एक बढ़कर कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा दर्शकों का मन मोह लिया। कु. इच्छिता शर्मा ने सरस्वती वंदना तथा तत्पश्चात 'एक राधा, एक मीरा...' गीत के सुमधुर गायन से सबका मन मोह लिया। नाटक 'समाज का एक सच-ट्रांसजेंडर' ने सभी दर्शकों की वाहवाही लूटी। इसी नाटक के एक चरित्र के लिए वरुण तोमर, बीएससी तृतीय वर्ष को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्रदान किया गया। नाटक 'वतन के लिए' की भी भरपूर सराहना हुई। कु. काजल ने हरियाणवी लोक नृत्य, भूपेन्द्र ने शिव तांडव नृत्य तथा कु. प्रेरणा ने घूमर नृत्य प्रस्तुत किया। अमानी मलिक और नकुल जादौन ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। साथ ही पारस शर्मा तथा नाज़िम ने गीत प्रस्तुत कर समां बाँध दिया। कुल 12 प्रथम, 14 द्वितीय, 15 तृतीय तथा 20 सांत्वना पुरस्कारों से छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता की विजेता प्रविष्टियों के साथ सभी पोस्टर्स की एक प्रदर्शनी भी गुणवत्ता हॉल में लगाई गई। रंगोली प्रतियोगिता के छात्र-छात्राओं ने गुणवत्ता सभागार के मुख्य द्वार तथा लाइब्रेरी के बरामदे में सुंदर रंगोली बनाकर कार्यक्रम को और भी खूबसूरत बना दिया।

कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि प्रो. एस. एन. शर्मा ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के व्यक्तित्व निर्माण पर पड़ने वाले प्रभावों का जिक्र किया। एल.आर. कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर यूबपी सिंह ने भी व्यक्तित्व निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा नई शिक्षा नीति को लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया। वीएमएलजी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. इन्द्राणी ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र-छात्राओं को बधाई दी।

सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए एम एम एच कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. पीयूष चौहान ने अतिथियों का धन्यवाद दिया तथा सभी विजेताओं को आशीर्वचन प्रदान किया। कार्यक्रम का समापन अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. केशव कुमार के धन्यवाद ज्ञापन तथा साहित्यिक-सांस्कृतिक परिषद की संयोजिका डॉ. रीना सिंह द्वारा प्राचार्य प्रो. (डॉ.) पीयूष चौहान के प्रति विशेष आभार तथा अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. केशव कुमार को धन्यवाद, सभी छात्र-छात्राओं को विशेष बधाई एवं जीवन के आगामी समय के लिए आशीर्वचन दिया तथा सभी के प्रति धन्यवाद तथा राष्ट्रगान के साथ सांस्कृतिक सप्ताह तथा पुरस्कार वितरण समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

वेद मन्त्र

1. न दुरूक्ताय स्पृहयेत्।
(ऋग्वेद: 1.41.9)
2. दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते
दक्षिणावन्त: प्र तिरन्त आयु:।।
(ऋग्वेद: 1.11.6)
3. न श्व: श्वमुपासीत। को हि मनुष्यस्य श्वो वेद।
(शतपथ ब्राह्मण 2.1.3.9)
4. यदा न कुरूते पापं सर्वभूतेषु कर्हिचित्।
कर्मणा मनसा वाचा ब्रह्म सम्पद्यते तदा।।
(महाभारत 76.52)
5. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्त देवे तरो जन:।
स यत्प्रमाणं कुरूते लोकस्तनु वर्तते।।
(श्रीमद्भगवद्गीता 3.21)
6. सत्यमेकपदं ब्रह्म सत्ये धर्म: प्रतिष्ठित:।
सत्यमेवाक्षया वेदा सत्येनावाप्यते परम्।।
(रामायणम् 14.7)
7. यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मन:।
तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत्।।
(मनुस्मृति 4.161)
8. सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्म: सनातन:।।
(मनुस्मृति 4.238)
9. मातृवत् परदाराणी परद्रव्याणि लोष्टवत्।
आत्मवत् सर्वभूतानि वीक्षन्ते धर्मबुद्धय:।।
(पंचतन्त्रम् 1.435)
10. मूढानामेव भवति क्रोधो ज्ञानवतां कुत:।
(विष्णुपुराणम् 1.1.17)
11. सहसा विदधीत न क्रियाम्।
विवेक: परमापदां पदम्।।
(किरातार्जुनीयम् 2.30)

-रूपल
बी.ए. III year

बालश्रमिकाः...संस्मरणम्

एकदा विद्यालये चतस्रः बालिकाः -दिव्या, प्रिया, तनिष्का, स्मारिका च मिलित्वा वार्तालापं कुर्वन्ति स्म।

दिव्या-प्रिये! वयम् धन्याः भाग्यवत्यः च यत् अस्मासु ईश्वरस्य कृपा अस्ति। वयं यथेच्छया क्रीडामः, खादामः, पठामः च।

प्रिया-शोभनम्! परं मम मनसि अतीव दुःखं वर्तते यत् अस्मिन् संसारे अनेकाः बालकाः भोजनं, शिक्षां, वस्त्रां च प्राप्तुम् समर्थाः न सन्ति।

दिव्या-त्वम् कथं जानासि?

प्रिया-अहं प्रतिदिनं बाल-श्रमिकान् पश्यामि। अबोधाः बालकः गृहेषु, आपणेषु, उद्योगेषु च श्रमं कुर्वन्ति।

तनिष्का-आम्! मम गृहसमीपे अपि एका द्वादश वर्षीया बालिका पात्रमार्जनं सम्मार्जन-क्रियां च करोति। ते सर्वदा तस्यां क्रुध्यन्ति, ताडयन्ति च ताम्।

दिव्या-अहो! एतत् तु न शोभनम्।

प्रिया-एकदा अहं रेलयानेन दिल्लीनगरम् अगच्छम्। रेलयानस्य तस्मिन कक्षे अनेकाः धनिकाः जनाः अतिष्ठन्। रात्रौ वयं सुखनिद्रां अस्वपिम।

स्मारिका-तदा किम् अभवत्? किं त्वं तत्र निद्रायाम् स्वप्नम् अपश्यः?

प्रिया-न न ! तत् स्वप्नं नासीत्। तत, तु यथार्थ घटनासीत्। यत् एकः अबोधः बालकः कक्षे सम्मार्जन-क्रियाम् करोति स्म। तस्य शरीरे जीर्णानि वस्त्राणि आसन्। सः भूतले पतिताम् रोटिकाम् अखादत्। सः क्षुधितः आसीत्।

दिव्या-अहो दुःखं। बाल्यकाले एव ते भाग्यहीनाः। क्रीडायाः स्थाने ते श्रमं कुर्वन्ति।

स्मारिका-मम मनँसि एकः विचारः अस्ति। वयं मिलित्वा निर्धनबालकेभ्यः धनम् एकत्रीकुर्मः।

तनिष्का-वयं उत्तमे विद्यालये पठामः। अस्माकं कर्त्तव्यः अस्ति। तेषां शिक्षाऽर्थे प्रयत्न कुर्यामः।

प्रिया-मम भ्राता एकः समाजसुधारकः अस्ति। अहं तमपि कथायिष्यामि यत् सः निर्धनानां बालकानां सहायता कुर्यात्।

दिव्या-मम समीपे अनेकानि वस्त्राणि, क्रीडनकानि, पुस्तकानि च सन्ति। अहं तु तानि निर्धनबालकेभ्यः दास्यामि।

प्रिया-आगच्छत! संकल्पं कुर्यामः यत् बालश्रमिकानां उद्धाराय प्रयासं करिष्यामः।

चतस्रः बालिका-आम्! वयं एवमेव करिष्यामः।

-भाषा चौहान
शोध छात्रा (रिसर्च स्कॉलर)
संस्कृत विभाग

विषय वाटिका

संदेश

- राज्यपाल, उत्तर प्रदेश — आनंदीबेन पटेल
- कुलपति, सी.सी.एस.यू. — प्रो० संगीता शुक्ला
- प्राचार्य के कलम से — प्रो० पीयूष चौहान

हिन्दी

- सम्पादकीय — डॉ० अरुण लता वर्मा — 4
- गुरु पिताजी महाराज एक झलक — डॉ० अरुण लता वर्मा — 5
- एक स्थाई कल के लिए लैगिंक समानता — डॉ० अरुण लता वर्मा — 6
- आधुनिकता और विध्वंस — डॉ० विमलेश यादव — 9
- दुबई संस्मरण — डॉ० मीनाक्षी सक्सैना — 10
- गीत — डॉ० सीता राठौर 'सागर' — 13
- शिक्षक के रूप — डॉ० गीता शर्मा — 14
- ड्यूटी चुनाव की — डॉ० बीना शर्मा — 15
- भारतीय अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता — डॉ० रेनू सिंह राना — 16
- अस्तित्व बोध — नकुल जादौन — 18
- शिक्षा के स्मरण — विरेन्द्र सिंह — 18
- नौकरी — वरुण तोमर — 19
- हिन्दी — विरेन्द्र सिंह — 19
- मानवता — रौनक पवार — 20
- उम्र से कई साल बड़ा हूं — सूरज कमल — 20
- बेरोजगारी — साक्षी शर्मा — 21
- मेरा बचपन — यश कुमार — 22
- हौसला — खुशबू वर्मा — 22

धरती को माँ का दर्जा दिया	सलोनी कुमारी	23
संघर्ष भरी नारी	सुनयना	23
जल बूंद	खुशबू वर्मा	24
हार के आगे जीत है	खुशबू वर्मा	24
2047 में मेरे सपनों का भारत	अंजलि चौबे	25
विश्व युद्ध का खतरा और हम	रौनक पवार	26
कोरोना	अंजलि चौबे	28
अनमोल बचन	वैशाली	28
नदियों की लहरों से	सोनाली उपाध्याय	29
बदलता दौर	उमेश कुमार	29
मेहनत और कामयाबी	अर्पित सिंह	29
नवीकरणीय ऊर्जा	अनुष्का नागर	30
मेरे दिल और मेरे मन की सोच	रवि अहिरवार	31
आपके हाथों से	नकुल जादौन	31
मैं थोड़ा जीना चाहती हूं	स्वाति सिंह	32
प्रकृति और प्रतिशोध	खुशबू वर्मा	32
गीत भजन गंगा	ईशा कौशिक	33
परिवार	अमिषा	33
विश्व युद्ध का खतरा और हम	मृदुल कुमार	34
हर पग ये बढ़ाना है	प्रवीण साहनी	35
क्या मैं आजाद हूं?	कृष्णा ठाकुर	36
बैठ जाता हूं मिट्टी पर अक्सर	छवि शर्मा	37
मेरी माँ	प्रवीण साहनी	38
मेरे जीवन में मेरे शिक्षकों का महत्व	प्रियंका	39
माँ	काजल	40
शिक्षक	काजल	40

❁ देश का युवा	रोहन कुमार	41
❁ 26 जनवरी	आयुष गोयल	41
❁ पढ़ाई और जंग	ललित शाह	42

संस्कृत

❁ गीतम्	डॉ0 सीता राठौर 'सागर'	43
❁ बालश्रमिका संस्मरण	भाषा चौहान	44
❁ श्लोक एवं उनके अर्थ	नत्या शर्मा	45
❁ अहंकार	नत्या शर्मा	45
❁ वेद मंत्र	रूपल	46

English

❁ Swami Vivekananda	Dr. Susmita Bhattacharya	47
❁ A Literary Feast	Dr. Surekha Ahlawat	49
❁ Protective Measures Against Cybercrime	Dr. Sunayana Trisal	50
❁ The Woman Empowerment	Dr. Mandira Gupta	53
❁ Interrogating the Present Praxis		54
❁ Knowledge is Power	Raunak Pawar	56
❁ Importance of Reading News Paper	Raunak Pawar	56
❁ Hard Work	Arpit Singh	57
❁ Duties of Students	Prerna	57
❁ Glimpse of Life	Ravi Shankar	58
❁ Its not just the end	Supriya Sharma	58
❁ O Man Stand Up	Praveen Sahni	59
❁ Importance of Self Defence in Women	Raunak Pawar	60
❁ Raising Legal Age of Marriage for Women	Sandeep Kumar	61
❁ Impact of good study habits	Raunak Pawar	62
❁ Tears: Kind of feeling	Tanishka	63
❁ Education is the most powerful weapon	Kapil Dev Raj	64
❁ How to become unconquerable	Abhishek Kumar Nath	65
❁ Women are active Agents of Change	Sonakshi Chaudhary	67

Reports

❁ वार्षिक प्रतिवेदन (छात्र कल्याण)	डॉ0 केशव कुमार	68
❁ Department of Law	Achievement Report	71
❁ सांस्कृतिक सप्ताह ''आशाएँ''	हीरक जयन्ती वर्ष	73
❁ राष्ट्रीय सेवा योजना		76
❁ क्रीड़ा परिषद	डॉ0 डी0आर0 यादव	78
❁ स्वीप, एम.एम.एच. कॉलेज	डॉ0 दीप्ति रानी	80